(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 55, अंक 9, मार्च, 2020
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

ईश्वर
अपने साथ है
फिर
डरने
की क्या बात है
सदा सफलता
साथ हमारे
जब
हाथ में उसका
हाथ है

बैंगलोर (कोरमंगला)- युवा सेवा प्रभाग की सेवाओं के लिए ब्र.कु.दिव्येश को मोमेन्टो भेंट करते हुए कर्नाटक के मुख्यमंत्री भ्राता बी.एस.येडीयूरप्पा तथा राजयोगिनी दादी जानकी जी।

बैंगलोर (जाकुर रिट्रीट सेन्टर)- राजयोगिनी दादी जानकी के 104वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में केक काटते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्र.कु.पद्मा बहन, ब्र.कु.हंसा बहन तथा अन्य।

हैदराबाद (शान्ति सरोवर)- अब्दुल कलाम कन्वेन्शन-2020 के समापन समारोह में पहुंचे भारत के उप-राष्ट्रपति महामहिम भ्राता वेन्कैय्या नायडू को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.कुलदीप बहन।

कोलम- सेवाकेन्द्र के नए भवन का उद्घाटन करते हुए राज्यपाल महामहिम भ्राता आरिफ मोहम्मद खान। साथ में बहन रेशमा आरिफ मोहम्मद खान, ब्र.कु.बीना बहन, ब्र.कु.कलावती बहन तथा ब्र.कु.पंकजा बहन।

नई दिल्ली- भारतीय जनता पार्टी के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष भ्राता जे.पी.नड्डा को बधाई और ईश्वरीय निमन्त्रण देने के बाद ब्र.कु.सविता बहन, ब्र.कु.शुभकरण भाई तथा ब्र.कु.रघु भाई उनके साथ।

तत्तापानी (सुन्नी)- चरित्र निर्माण आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता जयराम ठाकुर, सांसद भ्राता रामस्वरूप शर्मा, ब्र.कु.शकुन्तला बहन, ब्र.कु.रेवादास भाई तथा अन्य।

होली पर मनोरंजन 'आत्मभंजन' अथवा 'आत्मवंचन' का रूप न ले ले

मनोरंजन कोई बुरी चीज नहीं है बल्कि जीवन का एक आवश्यक अंग है, इससे मनुष्य फिर से ताजगी का अनुभव करता है। परन्तु, मनोरंजन अच्छा भी हो सकता है और बुरा भी हमारे विचार में अच्छे मनोरंजन निम्नलिखित मर्यादाओं का पालन करते हैं –

1.वे मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, नैतिक व आध्यात्मिक पहलू की उन्नति करते हैं। 2.वे मनुष्य के मन को उत्तेजना देने वाले, उसकी वासनाओं को भड़काने वाले, उसकी सादगी, सरलता और मितव्यता के लिए हानिकारक नहीं होते। 3.वे ऐसे नहीं होते कि जिन्हें मनुष्य अपनी माता, अध्यापकों या सम्माननीय महानुभावों की उपस्थिति में प्रयोग न कर सके। 4.उनमें मातृ-शक्ति का अनादर नहीं होता।

इस बात से कोई भी इन्कार नहीं करेगा कि ऐसे मनोरंजन श्रेयस्कर नहीं होते जिनसे संसार में अमर्यादा और उच्छृंखलता फैले, जो मनुष्य में हिंसा, खर्चीले और थोथे फैशन, भोग-तृष्णा, कुटिलता आदि-आदि के संस्कार डाले क्योंकि इससे अच्छे समाज की नींव ही हिल जाती है।

आधुनिक काल में हम अपने देश में हर वर्ष देखते हैं कि होली के अवसर पर कुछ लोग रंग डालने के अतिरिक्त अभद्र अट्टहास, असभ्य छेड़छाड़ एवं अमानुषिक हरकतें करते हैं। वे बस में जाते यात्रियों पर अचानक से रंग या पानी के गुब्बारे मारते हैं, प्लेटफार्म पर खड़ी होने वाली गाड़ियों पर पथराव करते हैं, राह जाती कन्याओं और बहनों पर अपने मकान की छतों पर से रंग डाल कर छिप जाते हैं या गलियों में उनके सामने मर्यादा-विरुद्ध हाव-भाव प्रकट करते हैं। स्कूटरों पर बैठे हुए यात्रियों तथा कारों व बसों की रंग से वे ऐसी बुरी हालत कर देते हैं कि बसों आदि को फिर से ठीक करने के लिए देश का लाखों-करोड़ों रुपया बेकार जाता है। अपने मकान की ऊपर की अटारी में खड़े होकर वे रस्सी में हुक या काँटा लटका कर बुजुर्गों की टोपी या पगड़ी ऊपर खींच लेते हैं। कारों, बसों और स्कूटरों के पहियों की हवा निकाल देते हैं जिससे उनका गमनागमन ही रुक जाता है ऐसी उच्छृंखलता को देख कर सरकार को पुलिस तैनात करनी पड़ती है। उसके बावजूद भी कई स्थानों पर मनोरंजन-मनोरंजन में छूरे चलाने की वारदातें भी हो जाती हैं। इस प्रकार यह मनोरंजन उनके लिए तो दिल बहलाने का साधन हो सकता है परन्तु कोई भी शिष्ट व्यक्ति इसको अच्छा नहीं समझेगा।

अत: मनुष्य मनोरंजन भले ही करे परन्तु उसे यह ध्यान में रखना चाहिए कि एक-दो घंटे में किया गया मनोरंजन चिरकाल के लिए किसी बुरी आदत का गुलाम न बना ले। वह उसके मन का रंजन करने के साथ-साथ उस पर काला अंजन न पोत जाए। वह मनोरंजन 'आत्मभंजन' अथवा 'आत्मवंचन' का रूप न ले ले। ■■■

अमृत-सूची

संजय की कलम से	3
संयम और सिद्धि (सम्पादकीय)	4
स्वैच्छिक गुलामी से बचें	7
प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के	8
पत्र सम्पादक के नाम	10
पतिव्रत धर्म	11
मन का फास्टफूड	15
दुर्भावना को सद्भावना में कैसे बदलें?	18
हे युवा ! उठो (कविता)	20
किधर जा रही हो?	21
ईश्वरीय ज्ञान के बल से व्यक्तिगत, पारिवारिक और प्रशासनिक क्षेत्र की उपलब्धियाँ	23
आओ ! होलिका जलाएं (कविता)	26
ईर्ष्या को कैसे समाप्त करें?	27
सचित्र सेवा-समाचार	28
दत्तात्रेय के 24 गुरु	29
सचित्र सेवा-समाचार	32
भक्ति का फल भगवान मिला	34

सम्पादकीय

संयम और सिद्धि

हरेक मनुष्य अपने जीवन में अनेक प्रकार के मनोरथ सिद्ध करना चाहता है परन्तु किसी को आंशिक और किसी को सम्पूर्ण सफलता प्राप्त होती है और कोई बिल्कुल निष्फल हो रह जाता है। फिर, कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनके हाथ में ऐसी सिद्धि होती है कि लोग अपने मनोरथों की सिद्धि के लिए उनका परामर्श लेने अथवा आशीर्वाद लेने आते हैं। प्रश्न उठता है कि मनुष्य को सिद्धि कैसे प्राप्त होती है?

गहराई से विचार करने पर हम इस निर्णय पर पहुँचेंगे कि सफलता अथवा सिद्धि मुख्य रूप से 10 बातों पर आधारित है – 1.यत्न, 2.बुद्धि, 3.शक्ति, 4.एकाग्रता, 5.अवधि, 6.आत्मविश्वास, 7.दृढ़ता, 8.उपयुक्त मनोदशा, 9.त्याग-तपस्या तथा 10.भाग्य अब हम इनमें से हरेक के महत्त्व का संक्षिप्त उल्लेख करेंगे –

ठीक यत्न

हरेक कार्य के लिए यत्न तो करना ही पड़ता है। कहावत भी है कि यद्यपि शेर बलवान वन्य पशु है तथापि उसे उठकर शिकार को काबू करने का यत्न तो करना ही पड़ता है; शिकार स्वयं उसके मुँह में नहीं आ पड़ता। हमें याद रखना चाहिये कि हम जितना काम करेंगे, हमें उतनी कामयाबी मिलेगी। साधना के बिना सिद्धि नहीं होगी। अत: जो व्यक्ति पूर्ण सिद्धि चाहता है, उसे चाहिए कि पूर्ण रीति से जी-जान लगाकर प्रयत्न करे।

इस संसार में जो करता है, वही पाता है और जो जितना करता है, वह तदानुसार ही पाता है। यहाँ करनी-भरनी का ही खेल है। यहाँ करते की विद्या है। इस नियम को ध्यान में रखते हुए हमें प्रयत्न पूरा करना चाहिए, तभी पूरी सिद्धि प्राप्त होगी। अलौकिक सिद्धियाँ प्राप्त करने के लिए भी खूब पुरुषार्थ करने की जरूरत होती है, बहुत तप करना होता है, योग लगाना पड़ता है और सेवा करनी पड़ती है।

बुद्धि

बुद्धि तो सिद्धि के लिए मानो आवश्यक ही है। बुद्धि द्वारा ही मनुष्य विधिपूर्वक कार्य करता और विधि, सिद्धि की अग्रगामिनी है। मनुष्य कर्मेन्द्रियों द्वारा ही कार्य करता है परन्तु हमें याद रखना चाहिए कि कर्मेन्द्रियाँ मन के अधीन होती हैं और यदि ये सद्‌बुद्धि के अधीन हों तो सहज प्राप्ति होती है। बुद्धि के बल को शरीर के बल से बड़ा माना गया है तभी तो लोग पूछा करते हैं, 'अक्ल बड़ी या भैंस?'

बुद्धि में ज्ञान धारण होता है और ज्ञान द्वारा ही गति अर्थात् क्रिया होती है और क्रिया से ही कार्य सिद्ध होता है। जब कोई कार्य बिगड़ जाता है तो लोग कहते हैं, 'तेरी बुद्धि को क्या हुआ था? क्या तेरी अक्ल पर पर्दा पड़ गया था?' यह भी कहा गया है कि 'जब किसी मनुष्य के बुरे दिन आते हैं तो उसकी बुद्धि मारी जाती है।' जो व्यक्ति उल्टा कार्य करता है, उसके लिए लोग परमात्मा से प्रार्थना करते हुए कहते हैं, 'हे प्रभु, इसे सद्‌बुद्धि देना।' इन सभी बातों से स्पष्ट है कि बुद्धि के साथ सिद्धि का सीधा सम्बन्ध है।

इसके अतिरिक्त हम यह भी देखते हैं कि संसार में मनुष्य ने वैज्ञानिक आविष्कार करके तत्वों पर जो विजय प्राप्त की है अथवा बड़े-बड़े साधनों को सिद्ध करने का जो आश्चर्यजनक कार्य किया है, वे सब भी बुद्धि की ही उपलब्धियाँ हैं। बुद्धि द्वारा वह ऐसा शक्तिशाली बम बना सकता है कि जिस द्वारा बड़े-बड़े नगर भी कंपायमान हो

जाते हैं। बुद्धि ही के बल से मनुष्य ऊपर मंगल ग्रह तक और नीचे समुद्र-तल तक पहुँचा है और जहाँ एक ओर उसने परमाणु के भी अन्दर के भेदों को खोज डाला है, वहाँ उसने जीव-शास्त्र में भी नित्य नये शोध-कार्य द्वारा मनुष्य को मृत्यु के मुख से भी निकालकर वापिस लाने का समर्थ यत्न किया है। तो देखिये, सुख-स्वास्थ्य के कितने ही साधन बुद्धि की ही तो उपलब्धियाँ हैं।

केवल भौतिक सफलता ही नहीं बल्कि आध्यात्मिक सिद्धियों की प्राप्ति के लिए भी बुद्धि की नितान्त आवश्यकता है। बुद्धि द्वारा ही मनुष्य आत्मा और परमात्मा जैसे सूक्ष्म विषयों को ग्रहण कर इतना महान बन जाता है कि लाखों-करोड़ों लोग उसके आगे नतमस्तक होते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि बुद्धि भी एक बहुत बड़ी शक्ति है और सिद्धिदायिनी है। असामान्य सिद्धियाँ अथवा अलौकिक शक्तियाँ प्राप्त करने में इसका भी बड़ा स्थान है।

शक्ति

भौतिकी शास्त्र वाले तो हरेक कार्य की सिद्धि, शक्ति या ऊर्जा द्वारा ही मानते हैं। बात है भी ठीक ही। सभी सिद्धियाँ शक्ति के अधीन होकर रहती हैं। इसलिए लोग शक्ति की आराधना करते और शक्ति का संचय करते हैं। कमजोर तो कुचला जाता है। शक्तिशाली ही शासन करता है और समर्थ ही सुरक्षित रहता है।

शक्तियाँ अनेक प्रकार ही हैं – तन की शक्ति, मन की शक्ति, मस्तिष्क की शक्ति, धन की शक्ति, सहन-शक्ति, राज-शक्ति, नैतिक-शक्ति इत्यादि। परन्तु इन सभी में से विचार शक्ति सर्व प्रमुख है। विचारों ने ही दुनिया में बड़ी-बड़ी क्रान्तियाँ लाई हैं। यदि विचार और आचार मिल जायें तो वे संसार को स्वर्ग बना सकते हैं और यदि विचार और दुराचार मिल जायें तो वही संसार को नर्क बना देते हैं। विचार, पर्वतों को हिला कर रख देते हैं, समुद्रों में से भी अपना मार्ग बना लेते हैं, रेगिस्तानों में भी हरियाली ला सकते हैं और असंभव माने जाने वाले कार्यों को भी संभव बना सकते हैं। अत: विचार शक्ति ही वह अद्भुत शक्ति है, जिससे अद्भुत सिद्धियाँ होती हैं। आज हम संसार में अनेक प्रकार की शक्तियों का प्रयोग देखते हैं जिनमें विद्युत शक्ति, परमाणु शक्ति, ईंधन शक्ति, चुम्बकीय शक्ति, ताप शक्ति इत्यादि के नाम उल्लेखनीय हैं परन्तु इन सबको वश करके, इनका प्रयोग करने वाला मन इन सभी से प्रबल है। मन स्वयं एक परमाणु-जैसा ही है परन्तु वह परमाणु से अगण्य गुणा शक्तिशाली है। मन में चुम्बकीय शक्ति भी है और विस्फोटक शक्ति भी, तभी तो वह दूसरों को अपने प्रेम से आकर्षित भी कर लेता है, घृणा से हटा भी देता है और क्रोध द्वारा स्थिति को भयंकर भी बना देता है। मन में ताप द्वारा उत्पन्न होने वाली शक्ति भी है और विद्युत द्वारा पैदा होने वाली शक्ति से भी अधिक प्रबल, अधिक तीव्रगामी संकल्प शक्ति भी। अत: यों तो सब प्रकार की शक्तियाँ अपने-अपने कार्य को सिद्ध करने वाली हैं परन्तु मन की संकल्प शक्ति इतनी तीव्रगामी है कि वह स्थान और समय की रुकावटों को भी उलांघ कर भूत और भविष्य में अथवा ब्रह्माण्ड के इस छोर से उस छोर तक अकाट्य तथा अविरुद्ध गति से कहीं-की-कहीं जा सकती है।

एकाग्रता

निस्सन्देह; प्रयत्न, बुद्धि तथा शक्ति, सिद्धि को देने वाले तो हैं परन्तु यदि इनका एकाग्रता से प्रयोग किया जाये तो ही इनसे बहुत बड़े-बड़े कार्य सिद्ध हो सकते हैं। एकाग्रता से मनुष्य बड़ी-बड़ी समस्याओं का हल ढूंढ निकालता है।

प्रयत्न की एकाग्रता से वह बड़े-बड़े डैम, बड़ी-बड़ी गुफाएँ, गगन-चुम्बी भवन, महाकाय जलपोत, वायुयान इत्यादि बनाकर तैयार कर देता है। यदि मनुष्य प्रयत्न में एकाग्रता न लाये तो उसके कार्य अधूरे और असफल रह जाते हैं। यदि एक मनुष्य, किसी एक ही स्थान पर पन्द्रह-बीस फुट गहरा गड्ढा खोद देता है तो वह अपने लिए वहाँ पानी निकाल लेता है और यदि वह पन्द्रह स्थानों पर एक-एक फुट मात्र खोदता है तो उससे उसका जल का प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। तभी तो लोग कहते हैं कि जो काम करो, उसमें पूरी तरह से लगकर उसे पूरा करो।

अगर आप तैरना सीखना चाहते हो तो पानी में कूदो, सूखी ज़मीन में कोई भी आपकी मदद नहीं कर सकता

यही बात हम शक्ति के बारे में भी कह सकते हैं। सूर्य की शक्ति को जब किसी उत्तल लैंस (बीच से मोटा, किनारों से पतला) द्वारा एक स्थान पर एकाग्र किया जाता है तो उसमें जलाने की शक्ति आ जाती है। आज वैज्ञानिकों ने सूर्य के ताप को एकत्रित कर उसे विद्युत में बदलकर घर में प्रकाश देने तथा भोजन बनाने के लिए प्रयोग करने के यन्त्र बना लिए हैं। वैज्ञानिकों ने ऐसे भी यन्त्र बनाये हैं कि जिन द्वारा वे प्रकाश की किरणों को एकाग्र कर एक स्थान पर डालते हैं तो उन शक्तिशाली किरणों से लोहे की मोटी चादर में भी छेद कर सकते हैं और जहाँ चाहें वहाँ आग लगा सकते हैं। इन्हें वे लेसर रेज़ कहते हैं।

उपरोक्त से स्पष्ट है कि मन, जो कि प्रयत्न और शक्ति को भी वश करने वाला है, को एकाग्र करने से क्या सिद्धि नहीं हो सकती होगी? जब प्रकृति के किसी कार्य पर मन एकाग्र करने से मनुष्य बड़े-बड़े साधन बना लेता है तो सर्वशक्तिमान परमात्मा पर एकाग्र करने से कौन-सी सिद्धि प्राप्त करना असाध्य होगा?

अवधि

यदि कोई कार्य रुक-रुक कर होता है तो उसमें वह खूबी नहीं आती जो एकतान्ता से करने में आती है। किसी भी कार्य को धारावाहिक रीति से करने से जो रस पैदा होता है, वह उसे बीच-बीच में छोड़ने से नहीं होता। एक बात सुनने के बाद यदि काफी समय पड़ जाता है, तो मनुष्य को वह बात भी भूल जाती है अत: अध्यापक वर्ग अपने शिष्यों को थोड़े-थोड़े समय के बाद उनका पाठ दोहरा दिया करते हैं। मनुष्य किसी कार्य को थोड़ा सीख लेने के बाद यदि काफी अवधि के बाद करता है तो उसे इतनी सिद्धि अथवा सफलता प्राप्त नहीं हो पाती जितनी कि निरन्तर करने से। यही कारण है कि हम लोगों को यह कहते हुए सुनते हैं, 'मैं उस कार्य को इतनी अच्छी रीति से नहीं कर पाया क्योंकि मैंने कुछ समय से इसे छोड़ रखा है' इसलिए निरन्तर प्रयास का महत्व है। जब एक कार्य बार-बार, ताँता लगाकर किया जाता है तो उससे उच्च कोटि की सिद्धि होती है। उदाहरण के तौर पर एक मनुष्य टाइप या शार्टहैन्ड सीखना शुरू करता है; छ: या आठ दिन सीखकर फिर छोड़ देता है। फिर साल बाद दस दिन सीखने चला जाता है। इससे उतनी सिद्धि प्राप्त नहीं होती जितनी कि लगातार अठारह दिन सीखने से होती है।

इसी प्रकार, यदि कोई मनुष्य प्रात:काल (अमृतवेले) योग का अभ्यास करता है और फिर दिन-भर की अवधि में वह अभ्यास छोड़े रहता है तो दूसरे दिन उसके अभ्यास की गहराई अथवा ऊँचाई वैसी नहीं होती जैसी कि निरंतर अभ्यास करने वाले अथवा थोड़ी-थोड़ी अवधि के बाद अभ्यास करने वाले व्यक्ति की होती है। हम प्राय: यह भी देखते हैं कि यदि कोई व्यक्ति प्रतिदिन ज्ञान स्नान नहीं करता तो उसकी मनोदशा का दिव्यीकरण सुचारू रूप से नहीं होता; उसकी प्रगति में निरन्तर बढ़ावा नहीं होता और उसको स्थिति दिनोंदिन तीव्रता से; उत्तरोत्तर उच्च कोटि अथवा उच्च भूमिका को प्राप्त नहीं होती। इसकी बजाय जो व्यक्ति घन्टों लगातार योगाभ्यास करता है, वह उच्च श्रेणी के अनुभव पाता है, नई-नई स्थिति का रस लेता है और योग के अनमोल रहस्यों को जान लेता है। आगे बढ़ने से रोकने वाली कई प्रकार की बाधाओं के चक्रव्यूह का भेदन करके वह योग के अन्तर्तम और श्रेष्ठतम रहस्यों तक पहुँच जाता है।

किसी भी कार्य को एक बार करके अधूरा छोड़ देने से, फिर थोड़ा करके फिर छोड़ देने से मनुष्य का मन भी उस कार्य से उचाट-सा हो जाता है। वह स्वयं को उस कार्य में उतना नहीं लगा पाता और मन का लगना अथवा मग्न होना तो सिद्धि की प्राप्ति के लिए आवश्यक है। अत: सफलता या सिद्धि की प्राप्ति के लिए निरन्तर, लगातार, अखण्ड अथवा एक-रस पुरुषार्थ करने की जरूरत है वरना स्वयं रुक जाने से सिद्धि भी रुक जाती है।

(क्रमश:)

स्वैच्छिक गुलामी से बचें

ब्र.कु. स्वाती रामानंद शेट, पोन्डा (गोवा)

भारत एक महान देश है जिसे देवी-देवताओं की भूमि भी कहा जाता है। यह देश कुछ समय पहले सोने की चिड़िया कहलाता था तथा धन-धान्य से भरपूर, खुशियों से भरा हुआ था। इसकी संपन्नता देख कितने ही विदेशियों को यहाँ राज्य करने की इच्छा हुई। कभी मुगल आए, तो कभी अंग्रेज। हरेक ने अपना राज्य जमाने की कोशिश की।

इंटरनेट का 'नेट'

आज यहाँ ना तो मुगलों का राज्य है, ना ही अंग्रेजों का। भारत आज स्वतंत्र देश है। फिर भी क्या यहाँ पहले जैसी सुख-शान्ति है? ऋषि-मुनियों की तपस्या पर थमे इस देश में क्या आज भी उतनी ही पवित्रता है? अंग्रेज तो चले गये लेकिन कहीं उनकी जगह विज्ञान के साधनों ने तो नहीं ले ली है? गुलाम तो हम तब भी बने थे मगर उनकी इच्छा से, गुलाम तो हम आज भी हैं लेकिन अपनी इच्छा से। आज का युवावर्ग अपने सब कर्तव्यों, लक्ष्यों को भुलाकर इंटरनेट के 'नेट' में फँसता जा रहा है। आज हमारी बातचीत साथ वाले से कम होती है और मोबाइल से ज्यादा। पास में पालक आकर बैठते हैं, बच्चों को पता ही नहीं। माँ कुछ बोलना चाहती है, खाना खाने के लिए बुलाना चाहती है लेकिन बच्चा तो कान में इयरफोन डालकर मुस्कराते हुए अपने दोस्तों से बातें कर रहा है या फिर चटकीले वीडियो देख रहा है। वह मोबाइल का इतना गुलाम बन चुका है कि उसे पता ही नहीं, दुनिया में क्या चल रहा है? वह मुक्त सांस लेना, हँसना, खिलखिलाना, मौज मनाना, पढ़ना सब कुछ भूल चुका है।

समाधान है राजयोग

साधनों की रचना इन्सानों की मदद करने के लिए की गयी थी ताकि उनका समय बच जाए और वे अपना विकास करें लेकिन आज हम क्या देख रहे हैं? एक मूल्यहीन समाज, जो साधनों के चमकीले विज्ञापनों से आकर्षित होकर विकारों के वश होता जा रहा है और अपनी सभ्यता, संस्कार, संस्कृति को भुलाये बैठा है। आज हर

त्योहार, हर रिश्ता एक फैशन का रूप ले रहा है। किसी को इस बात का अंदाज तक नहीं है कि हम इस फैशन की नदी में कहाँ तक बह गये हैं? क्या इससे बचा जा सकता है? क्या हम अपने समाज, युवाओं और भारत को बचा सकते हैं? इसका एक ही जवाब है और वह है राजयोग। राजयोग एक ऐसा अभ्यास है जिससे मनुष्य स्वयं की कमजोरियों और भूलों को पहचान कर अपना परिवर्तन कर लेता है। बड़े से बड़े व्यसन को छोड़ने की शक्ति उसमें आ जाती है। राजयोग के नित्य अभ्यास से मन की एकाग्रता बढ़ती है, विद्यार्थी अपनी बुद्धि का विकास करता है, जीवन में उमंग-उत्साह बढ़ने लगता है, खुशियों की बौछार होने लगती है, वह जीने की कला सीखता है और परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति उसमें आ जाती है।

राजयोग के अनेक फायदे हैं। इसका अभ्यास; बच्चे, बूढ़े, युवा, स्त्री-पुरुष आदि कोई भी कर सकते हैं। वर्तमान समय दुनिया में नौ लाख से भी ज्यादा भाई-बहनें राजयोग का अभ्यास कर रहे हैं और जीवन का आनंद ले रहे हैं। स्वयं भगवान इस सृष्टि पर अवतरित होकर मनुष्यों को राजयोग सिखा रहा है। भारत के हर शहर में और गाँवों में भी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सेवाकेन्द्र मौजूद हैं। हर सेवाकेन्द्र पर बिना शुल्क राजयोग सिखाया जाता है। राजयोग सीखकर कोई भी अपना जीवन बदल सकता है। ■■■

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

प्रश्न- सेवा के साथ-साथ और किस बात पर अटेन्शन चाहिए?

उत्तर- जैसी स्मृति, वैसी वृत्ति और दृष्टि होती है। ज्ञानमार्ग में यह स्वाभाविक है कि जब भी कोई मिलने आता है तो स्मृति, वृत्ति, दृष्टि द्वारा मुस्करा करके मिलते हैं, जिससे कैसी भी मुश्किलात आए आपेही ठीक हो जाती हैं। बाबा ने हम सबको हर कदम में पदमों की कमाई करना प्रैक्टिकल में सिखाया है। समर्पण जीवन बहुत मदद कर रहा है। मैं नहीं समझती हूँ, कोई की भी बुद्धि खाने-पीने-पहनने-घूमने में जाती होगी! मुझे यह चाहिए, वह चाहिए... नहीं। ड्रामा अनुसार दिल कहता है, जितनी सेवा हमारे से हो सकती है, उतनी करती रहूँ।

अभी चारों ओर सेवा करने का बहुत अच्छा चास है। बाबा का कितना बड़ा यज्ञ है, हम यज्ञ में समर्पण हैं। यज्ञ की सेवा रात-दिन होती रहे। बाबा ने हम बच्चों को ड्रामा की नॉलेज क्लीयर दी है, सारे विश्व की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाई है। 84 जन्मों के चक्र का, शुरू से अन्त तक का कितना सुन्दर ज्ञान दिया है। बाबा ने हमको योग का भी ज्ञान दिया है, ड्रामा का भी ज्ञान दिया है। ज्ञान बड़ा अच्छा है, ज्ञान का मनन-चिंतन-मंथन करने से हमको बहुत फायदा मिला है। इसके सिवाए और कोई काम नहीं है। बाबा ने हमें समझाने में कितनी मेहनत की है। बाबा को हमारा कितना फिकर है! मैं देखती हूँ, कई भाई-बहनें सेवा भले करते हैं पर ज्ञान-योग-धारणा पर जितना अटेन्शन होना चाहिए, उतना नहीं है। तो सभी चारों ही सबजेक्ट को देखो और चेक करो, क्या फील होता है? बाबा ने हमको ज्ञानी तू आत्मा बनाने के लिए कितना बड़ा यज्ञ रचा है। यज्ञ से हमारी पालना हो रही है। पढ़ाई भी यज्ञ के आधार से है। सारे विश्व में कितनी अच्छी सेवायें चल रही हैं, सब देख रहे हैं। चारों तरफ देखते हैं, बाबा कैसे सभी आत्माओं को अपना बना रहा है, उन्हों की पालना कैसे कर रहा है, फिर भी बाबा को देखो, बेफिकर है। हमें भी कोई फिकर नहीं है परन्तु चारों सबजेक्ट में से अगर एक सबजेक्ट में भी कोई कमी रह गई तो अच्छा नहीं है।

प्रश्न- दिल को साफ और सच्चा रखने के लिए क्या करें?

उत्तर- मेरी मोहब्बत ईश्वर के साथ है इसलिए याद में मेहनत नहीं करनी पड़ती है। मैंने ईश्वर को दिल से देखा है, जाना है। वह मेरा बाबा परम आत्मा सर्वशक्तिवान है, उस भगवान की मैं सन्तान हूँ। मैं महान ते महान भाग्यशाली हूँ। ऐसे दिल, दिलाराम के साथ है तो साफ दिल अपना काम कर रहा है। दिल लेने वाला दिलवाला एक बाबा ही है। कहते भी हैं, दिल साफ है तो मुराद हासिल है। जो संकल्प करो वो साकार हो जाता है क्योंकि साधारणता को छोड़ श्रेष्ठ संकल्प करने से सहजयोग हो जाता है और इससे योगबल जमा होता है।

दिल में कोई बहाना नहीं होता। बहाना वे बनाते हैं जिनके दिल में कोई खोट है। दिल साफ है, सच्चा है, रहमदिल है, उसके लिए सिर्फ दो बातें याद रखनी हैं, फॉरगिव और फॉरगेट। चारों तरफ नज़र फिराओ तो भूल-भुलैया का खेल लगता है। कभी गलती से कोई एक भूल भी हुई तो अच्छा नहीं है **इसलिए भूल से भी भूल न करो। अगर होती है तो उसे भी भूल जाओ, इससे दिल साफ रहता** है। दिल साफ होता है तो संकल्प बड़ा श्रेष्ठ होता है तब बहुत खुशी रहती है।

प्रश्न- हमारे दुश्मन कौन हैं?

उत्तर- काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार – ये पाँचों ही हमारे दुश्मन हैं। इनमें भी काम महान शत्रु है। अब परमात्मा का बच्चा बनने से ब्रह्माकुमारी जीवन पवित्रता के बल से बड़ा अच्छा पास हो रहा है। बाकी भगवान को हमारे से और कुछ नहीं चाहिए। वह हमको पावन बनाने के लिए ही आया है।

हम सब आपस में सदा ही मुस्कराते हुए मिलते हैं, इससे बहुत सुख मिलता है। बाबा ने अनासक्त वृत्ति से निष्काम सेवाधारी बना दिया है। अन्तर्मुखता, एकाग्रता की शक्ति दिल को बहुत अच्छा बना देती है। मुझे दिल में खुशी है, आपको भी होगी, यह मुझे गैरंटी है। दिलवाला बाप ने हमारे दिल की सच्ची बातें सिखा करके, स्नेह की दृष्टि देकर साफ-स्वच्छ बना दिया है। आप भी सभी को मन की शान्ति से, दिल की सच्चाई से देखो। भगवान के घर में दिल की सच्चाई वाले ही पहुँचते हैं और नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनने की पढ़ाई पढ़ते हैं। ज्ञान, योग, धारणा और सेवा – ये चार सबजेक्ट हैं। ज्ञान माना मैं कौन? मेरा कौन? उसमें सब ज्ञान आ जाता है। जैसे बाबा ने कहा, स्वदर्शन चक्रधारी बनो तो कभी बुद्धि इधर-उधर नहीं जाती क्योंकि बुद्धि का दिल से कनेक्शन है।

अब हम सबको रूहानी कनेक्शन में रहना है। हमारी दृष्टि और वृत्ति कैसी हो, यह बहुत अच्छा पाठ बाबा ने पढ़ाया है, दिल ने स्वीकार किया है। कभी एक-दो को देखो या न भी देखो पर अन्दर सूक्ष्म हम साथ हैं। एक ही घर, एक ही बाप के बच्चे, एक ही भण्डारा जहाँ से हम खाते हैं, एक ही मुरली जो विश्व भर में चलती है। मुरली से कोई ऐसा अच्छा जवाब मिलता है जो सारे दिन में उसी को याद करके दिल खुश रहता है। पुरानी बातें जो देह अभिमान की हैं, उनसे मुक्ति। जीवन है पर मुक्त है, बन्धन नहीं है। जब कोई बन्धन नहीं है तो दिल बड़ा खुश है, आराम में रहता है।

प्रश्न- जीवन में उमंग-उत्साह बनाए रखने का आधार क्या है?

उत्तर- उमंग-उत्साह प्रैक्टिकल लाइफ में तब रहता है जब देही-अभिमानी स्थिति है। लक्ष्य को न भूलें तो लक्षण स्वत: आते हैं। लक्ष्य है कि उमंग-उत्साह और खुशी में रहना ही है, मैं नहीं रहूँगी तो कौन रहेगा? जिसमें उमंग-उत्साह नहीं होता है, वो न खुद करता है, न औरों में उमंग लाता है। मेरा तो उमंग-उत्साह कभी कम नहीं हुआ है। शुरू से ले करके दो बातें बुद्धि में हैं। एक, बाबा की मुरली कभी मिस नहीं करनी है, दूसरी, मुरली लाइफ में उतारनी है। मुरली सिर्फ पढ़ने और सुनने के लिये नहीं है, प्रैक्टिकल लाइफ में राजाई लेने के लिए मुरली हमें बल देती है। हम जो चाहें सो कर सकते हैं।

पहले मन शान्त हो और कर्मेन्द्रियाँ ऑर्डर में हों, न कि दबाव में। कर्मेन्द्रियाँ ऑर्डर में होंगी तो एक्युरेट काम करेंगी। उनसे ज्ञानी तू आत्मा के लक्षण दिखाई देंगे।

मुख्य ज्ञान है आत्मा और परमात्मा का। आत्मा के ज्ञान से अंगुली अपनी ओर है, परमात्मा का ज्ञान देते समय अंगुली ऊपर की ओर जायेगी। एक अंगुली यहाँ लाइट बना देती है और दूसरी अंगुली ऊपर माइट दे देती है। लाइट बन गये, माइट मिल गई, वन्डरफुल ड्रामा। मैंने क्या किया, जो मैं कहूँ, मेरे से नहीं होता है। भगवान देख रहा है इसलिए मैंने कभी यह नहीं कहा, मेरे से नहीं होता है। भले शरीर नाटक दिखाता है परन्तु जब आप लोगों की सेवा में आयेंगी, सब ठीक हो जाता है।

वही व्यक्ति वास्तव में अहिंसक है जो स्वयं को भी दुःखों से मुक्त रखता है

पत्र सम्पादक के नाम

दिसम्बर, 2019 अंक में 'संजय की कलम से' लेख 'स्वयं को अहंकार से बचाओ' विचारोत्तेजक लगा। कुछ उपलब्धियों के बाद हम अपनी महिमा सुनना चाहते हैं। यह पतन का आरंभ है। बाबा का आशीर्वाद और उनके प्रति समर्पण, समस्याओं को सहज ही सुलझा देता है। 'बाबा ने खुलवाया त्रिमूर्ति क्लीनिक' इस अनुभव के लेखक पर बाबा के आशीर्वाद की चरमसीमा है। संपादकीय 'मानव का दिव्यीकरण' दिल को छू गया।

ललित कुमार शर्मा, इन्दौर (म.प्र.)

'ज्ञानामृत' पत्रिका द्वारा एक से बढ़कर एक तोहफे ज्ञानवर्धक लेखों, अनुभवों और आदरणीया राजयोगिनी दादी जानकी जी से प्रश्नोत्तर के रूप में मिलते हैं। दिसम्बर अंक को 'स्वयं को अहंकार से बचाओ', 'मानव का दिव्यीकरण', 'ज्ञानी तू आत्मा' और 'हिम्मत' जैसे बेहतरीन लेखों से सजाया गया है। भ्राता आत्मप्रकाश द्वारा आस्ट्रेलिया में प्रश्नोत्तर बहुत समाधान स्वरूप लगे। 'राजयोग की उपलब्धियाँ', 'जेल में हुआ नया जन्म' और 'बाबा ने खुलवाया त्रिमूर्ति क्लीनिक' जैसे अनुभवों ने बाबा के प्रति अधिक निश्चयबुद्धि बनाया। हमें सावधानी बरतने के निर्देश भी दो लेखों में दिए गए हैं, एक 'इन्टरनेट और अन्तरनेट', दूसरा 'मित्र रूप में शत्रुओं को पहचानो।' कवर पेज नव वर्ष 2020, नई सृष्टि की बधाइयों सहित सुहावना लगा। यह पत्रिका कम पन्नों में बहुत ज्यादा लाभदायक है। इसको पढ़ने वालों की बैटरी चार्ज हो जाती है। सेवाओं के लिए अच्छा माध्यम है। वाह बाबा वाह। वाह ज्ञानामृत वाह।

ब्र.कु.सुरेश बब्बर, पुल प्रह्लादपुर, नई दिल्ली

दिसम्बर, 2019 अंक में 'प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के' तथा 'आस्ट्रेलिया वालों के जीवन में आस है, विश्वास है' में उठाए गए प्रश्न और उत्तर बहुत ही प्रासंगिक हैं। इनसे जीवन की कई समस्याओं के समाधान खुद-ब-खुद मिलते चले गए। 'स्वयं को अहंकार से बचाओ' एवं 'हिम्मत' प्रशंसनीय रचनाएँ हैं। भाई-बहनों के अनुभवों के लेखों से उत्साह बढ़ता है। सभी रचनाकारों को बधाई एवं धन्यवाद।

ब्र.कु.ज्ञानानन्द मिश्र, भागलपुर (बिहार)

ज्ञानामृत का हमेशा इन्तजार रहता है। नवम्बर, 2019 अंक के सभी लेख अच्छे हैं। ब्रह्माकुमारी संस्था आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा विश्व में जो शान्ति, खुशी, पवित्रता का अनमोल खजाना बाँट रही है, इसमें ज्ञानामृत पत्रिका का भी बड़ा योगदान है। इसके लेख प्रेरणादायी होते हैं। पत्रिका समाज में जागरुकता लाने का काम कर रही है। 'असंक्रामक रोग और राजयोग' में बताया गया है कि वर्तमान की देह अभिमान भरी जीवन शैली के कारण तथा परमात्मा से योग न होने के कारण मानव असाध्य रोगों के शिकार हो रहे हैं। सम्पादकीय लेख 'झूठ और सत्य' सराहनीय है।

ब्र.कु.सुमित्रा देवी, बैरिया, बलिया (उ.प्र.)

दिसम्बर, 2019 अंक में छपा 'हिम्मत' लेख अत्यन्त परिणामकारी है। हर अच्छे कार्य में सदा विघ्न आते ही रहते हैं। पर इसके लिए घबरा जाना या सोचते रहना अथवा टालना, यह बुझेदिल वालों का काम है। हिम्मतवान बच्चे न कभी थकते हैं, न हिलते हैं। अंगद समान अचल-अडोल होते हैं। ऐसे बच्चों को सदा भगवान साथ-सहयोग देता है। ब्र.कु.उर्मिला बहनजी का यह लेख अत्यन्त मौलिक है। इसके लिए बहुत-बहुत अभिनन्दन समर्पित करता हूँ।

ब्र.कु.अमृतेश्वर तन्डर, अण्णिगेरी (कर्नाटक)

पतिव्रत धर्म

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

वर्तमान समय नारी वर्ग के दो अलग-अलग स्वरूप भारत देश में देखने को मिल रहे हैं। एक तरफ है दबी, कुचली, अपने अधिकारों से अनभिज्ञ या भिज्ञ होते भी उन्हें पाने में अक्षम नारी और दूसरी तरफ है कानूनी और शैक्षणिक बल से अपनी पहचान बनाने वाली नारी। परन्तु भारतीय पौराणिक काल में अनेक नारियों ने अपनी पहचान बनाई एक सर्वथा भिन्न बल से जिसका नाम है पातिव्रत्य बल। आज तो हम इसकी चर्चा भी कहीं नहीं सुनते और यदि कोई चर्चा कर भी दे तो इसे पुरुष के प्रति एक स्त्री की मानसिक गुलामी से अधिक कुछ समझा भी नहीं जाएगा।

पातिव्रत्य – एक तपस्या

पौराणिक काल में इस गुण के बल से नारी को सिद्धि प्राप्त करते हुए, प्रकृति को वश में करते हुए, स्वयं भगवान को भी अपने समक्ष झुकाते हुए और उत्तम वरदान पाते हुए दिखाया गया है। पुरुष का मन चंचल है, वह मानसिक रूप से एक के प्रति अविचल आस्था नहीं रख पाया इसलिए श्रीराम को छोड़कर अन्य किसी पौराणिक पुरुष को पत्नीव्रतधारी नहीं दिखाया गया परन्तु नारी तो चाहे उच्च कुल की रही या राक्षस कुल की, अडिग पतिव्रत धर्म के कारण सम्माननीय दृष्टि पाने के साथ-साथ कई अनुदान या क्षमा आदि प्राप्त करने की भी अधिकारी बनी। कुल मिलाकर कहने का भाव यह है कि पौराणिक नारियों के लिए पातिव्रत्य एक ऐसी तपस्या रही जिसने घर-परिवार में रहते भी उनको संन्यासियों, तपस्वियों की श्रेणी में ला खड़ा किया। कहा भी जाता है, सती (पतिव्रता नारी) और यती (तपस्वी पुरुष) ही संसार को गर्त में जाने से बचा सकते हैं।

क्या है पातिव्रत्य

किसी नारी के मन में यदि एक बार किसी पुरुष के प्रति पति-भाव जागृत हो गया तो आजीवन उसी पुरुष के साथ, उसी भाव को निभाना, यह है पातिव्रत्य। फिर चाहे वह पुरुष गरीब हो, कुलहीन हो, विकलांग हो, निर्वासित हो, आयु में बेमेल हो, स्वभाव में विपरीत हो, राजा हो, संन्यासी हो, चाहे उसकी जीवन-आयु कम हो, कोई भी हो,कैसा भी हो, नारी ने यदि एक बार पति-भाव से उसका वरण कर लिया तो उसके स्थान पर अन्य को विराजित नहीं करेगी, इस दृढ़ता का नाम है पातिव्रत्य। इस व्रत के लिए कई बार तो कई नारियों को माता-पिता, परिवार, समाज और राजा तक की अवहेलना का शिकार होना पड़ा, कठोर यातनाएँ भी सहनी पड़ी, कठोर परिश्रम करना पड़ा परन्तु वे अडिग रहीं और अन्त में विजयी भी हुई।

पातिव्रत्य – कमाल का गुण

आधुनिक युग में जहाँ संचार-माध्यमों द्वारा देहों का खुला प्रदर्शन हो रहा है, वहाँ अपनी मानसिक पवित्रता को बनाकर रखना किसी भारी चुनौती से कम नहीं है। इस चुनौती पर खरे उतरने वाले आटे में नमक की तरह कोई हों, नहीं तो वह भी असम्भव ही लगता है। भले ही कष्टसाध्य है परन्तु यह गुण है कमाल का। मन

की एकाग्रता, मन की स्थिरता एक बड़ी उपलब्धि है। फूलों पर भिन्न-भिन्न करती मक्खी को भी जब मनोनुकूल फूल मिल जाता है तो उसकी आवाज और गति को विराम लग जाता है और वह रसपान का आनन्द लूटने लगती है। वर्तमान समय नर-नारी के भटकते मन को भी ऐसा एक पति मिल जाए, एक पतिव्रत धर्म का लक्ष्य मिल जाए जिसमें मशगूल होकर मन निरन्तर आनन्द विभोर रहे, तो वे अनेक रोग, शोक, दिशाभ्रम, दृष्टि-भटकाव जैसी समस्याओं से बच सकते हैं।

भगवान शिव की श्रेष्ठ श्रीमत

नर हो या नारी, सभी आत्माएँ परमात्मा रूपी पति की प्रिय सजनियाँ हैं। वर्तमान संगमयुग पर भगवान शिव, पिताश्री ब्रह्मा के तन में प्रवेश होकर सभी आत्मा रूपी सजनियों के मन को सबल और सुन्दर बनाने के लिए यह श्रेष्ठ श्रीमत दे रहे हैं कि ''जैसे सच्ची पतिव्रता स्त्री सिवाय पति के और किसको भी लव नहीं करती है, वैसे ही आप आत्माओं को मुझ पारलौकिक बेहद के बाप को सच्ची दिल से याद करना है। जैसे आशिक-माशूक एक-दो को याद करते हैं, और कहीं उनकी बुद्धि नहीं जाती है, भले ही धन्धाधोरी करते हैं परन्तु दिल एक के साथ रहती है, वह पवित्र याद होती है, ऐसे ही आप आत्माओं का भी मैं सच्चा माशूक हूँ, मुझे भी धन्धाधोरी करते ऐसे ही याद करो।'' सर्व आत्माओं को गुणों के गहनों से सजाने वाला अविनाशी साजन, भरण-पोषण करने वाला भरतार, तीनों कालों में पत (इज्जत) बढ़ाने वाला पति, सृष्टि रूपी माल का अधिकार सौंपने वाला मालिक, दिल जीतने वाला दिलाराम तो एक परमात्मा शिव ही है। उसके प्रति एकनिष्ठ लगन रखना ही सच्चा पतिव्रत धर्म है। आइये देखें, पौराणिक नारियों से प्रेरित होते हुए वर्तमान युग में भगवान शिव के साथ किस प्रकार हम अपने पतिव्रत धर्म का निर्वाह कर सकते हैं।

श्री सीता जी

पतिव्रता सीता जी रावण द्वारा अपहृत होकर लंका में शोक वाटिका में बंदिनी होने के बावजूद सर्वथा निष्पाप और निष्कलंक रहीं। सैकड़ों प्रलोभनों और डराने-धमकाने के बाद भी वे एक राम में एकनिष्ठ रहीं। उनका तन भले कैद में था पर मन सदा प्रियतम राम के साथ रमण करता था। वे कहती थीं कि पापी रावण की वाटिका का मुझे भान भी न रहे। हम आत्माएँ भी एक शिव पिता के साथ पतिव्रत-धर्म में बंधकर निरन्तर उन्हीं के साथ रमण करें, उन्हीं की यादों में खोए रहें, उन्हीं के लोक में मन से विचरण करें। शरीर भले पाँच तत्वों के जगत में रहे परन्तु मन का बेड़ा यहाँ से उठा हुआ रहे। संसार हमारे लिए जैसे है ही नहीं, एक प्रियतम शिव में सारा संसार अनुभव हो। एक में सर्व सम्बन्ध, सर्व सुख, सर्व प्राप्तियाँ नजर आएँ। इस रावण राज्य के चारों ओर के नकारात्मक वातावरण को देखते भी ना देखें, नकारात्मक घटनाओं को ना सुनें, एक शिव ही दिल के सिंहासन पर विराजमान रहे। वर्तमान समय यही ईश्वरीय पतिव्रत धर्म सर्व अग्नि परीक्षाओं से पार कराने वाला है।

सती गान्धारी

महाभारत की एक पात्र गान्धारी ने पतिव्रत धर्म में बंधकर आँखों पर पट्टी बांध ली। इसका अर्थ है कि जो कुछ पति देख नहीं सकता या देखना नहीं चाहता, देखना पसन्द नहीं करता उसे पतिव्रता भी नहीं देखेगी। वर्तमान संगमयुग पर पति रूप परमात्मा इस कलियुगी नकारात्मकता से भरे वातावरण को ना देखते हैं, ना देखना चाहते हैं, ना देखना पसन्द करते हैं। ऐसे में हम

आत्मा रूपी पतिव्रता प्रियतमाओं का भी यह दृढ़ अनुकरणीय कदम होना चाहिए कि इस मिटने वाली, ऊपर से चमकीली और अन्दर से खोखली, विकृतियों से भरी दुनिया के दृश्यों को, लोगों को ना देखें। देखते हुए भी अन्दर के नेत्र से वही देखें जो प्रियतम शिव को पसन्द है। वे तीन स्थान हैं निराकारी वतन, सूक्ष्म वतन और आने वाली स्वर्णिम दुनिया।

सती सावित्री

पौराणिक राजकुमारी सावित्री ने, वन विहार करते हुए एक युवक को वृक्ष पर लकड़ी काटते हुए देखा और मन ही मन उसे पति मान बैठी। कालान्तर में यह जानने के बाद भी कि यह युवक राज्यहीन और आयुहीन है, अपने फैसले पर अडिग रही और उसी से विवाह कर, एकव्रता रूपी पवित्रता को बरकरार रखा।भगवान शिव अशरीरी और ऐश्वर्य के भोगों से विरक्त हैं। हमने भी मन से उनका वरण किया और ऐश्वर्य-मुक्त सादा जीवन व्यतीत करने का दृढ़ संकल्प किया है। साधनों और सुविधाओं का कितना भी लुभावना रूप हमारे सामने आ जाए परन्तु फिर भी हम अपनी सादगी, सरलता, पारदर्शिता, अनासक्ति और इन्द्रिय-जीत स्थिति को बनाए रखें, भोगों में अपनी दृष्टि को डुबोकर उसे कलुषित न होने दें, यही हमारा दृढ़ पातिव्रत्य है। इस एकनिष्ठता के व्रत के परिणाम रूप सावित्री की तरह हमें भी सतोप्रधान धन, ऐश्वर्य, राज्य, आयु, परिवार और सर्व प्राकृतिक सुख 21 जन्मों के लिए अवश्य प्राप्त होने वाले हैं।

सती दमयन्ती

पतिव्रता दमयन्ती की कथा में वर्णन आता है कि उनके सतीत्व पर वन में जब एक व्याध द्वारा आँच आई तो उन्होंने उसे शाप दे डाला। व्याध के प्राण-पखेरू तुरंत उड़ गए। प्यारे बाबा ने भी हम बच्चों को सिखाया है कि यदि हम एकव्रता हैं, एक की याद का कवच पहने हैं तो किसी भी आसुरी वृत्ति वाले की आसुरी दृष्टि-वृत्ति का प्रभाव हम पर नहीं आएगा। और ही वह भी पापात्मा से पुण्यात्मा बनने का बल हमसे प्राप्त कर लेगा। वास्तव में सच्चा पति, पतियों का पति एक परमात्मा ही है। सच्चाई-सफाई के साथ उनकी हर श्रीमत का पालन करना ही सच्चा पतिव्रत धर्म है।

सती अनुसूईया

सती अनुसूईया के पातिव्रत्य की कठोर परीक्षा ली गई जिसमें वे विजयी हुई। इसके फलस्वरूप उन्हें त्रिदेव के तेज से तेजवान पुत्र दत्तात्रेय की प्राप्ति हुई। पापाचार के

प्रतिभा, भगवान के द्वारा दिया गया उपहार है, आप इसके साथ क्या करते हैं, वह आपकी ओर से भगवान को उपहार है

कलियुगी वातावरण में अनेक बातें परीक्षाएँ बनकर हमें भी आजमाने आती हैं। वस्तु, वैभव, साधन, व्यक्ति आदि बहुरूप धारण कर हमारी साधना की थाह मापने आते हैं। ऐसे में यदि हम सावधान रहकर, माया के रूपों को पहचानकर अपने चित्त को परमात्मा की एकनिष्ठ याद में लगाकर रखते हैं तो वर्तमान और भविष्य में यश के अधिकारी बनते हैं और आयु, धन आदि के मनचाहे वरदान भी प्राप्त करते हैं। परीक्षा में भी अटल रहने वाली सच्ची आशिक आत्माओं पर भगवान भी कुर्बान जाते हैं। स्वयं भगवान हमें सर्व सम्बन्धों के सुख देने को तत्पर रहते हैं जिनमें से भगवान से पुत्र का सम्बन्ध भी एक सुन्दर अनुभूति है।

माता पार्वती

माता पार्वती हर जन्म में शिव रूपी साजन को पाने के लिए कठोर तपस्या करती दिखाई गई हैं। राजपुत्री होते भी संन्यासिनी की तरह शिव की लगन में मगन दिखाई जाती हैं। वे शिव को पा लेती हैं परन्तु आयु पूरी होने पर देह त्यागना पड़ता है। नया शरीर पाकर वे फिर शिव से मिलन मनाने की लगन में रहने लगती हैं। इस प्रकार अनेक जन्म बीत जाने पर वे भगवान शिव को कहती हैं, प्रभु, आप तो अविनाशी हैं परन्तु मैं बार-बार जन्म और बार-बार मृत्यु के चक्कर से थक चुकी हूँ, मुझे कोई ऐसी कथा सुनाइये जो मैं भी आपकी तरह अमर हो जाऊँ। यह सुनकर भगवान शिव ने पार्वती को अमरकथा सुनाई, ऐसा कथा में बताया गया है। वास्तव में वो पार्वती हम सब संगमयुगी आत्माएँ ही हैं। हमने पिछले 63 जन्मों में भक्ति करते-करते भगवान शिव को खोजा। इस क्रम में आत्मा की बैटरी पूरी तरह डाउन चली गई। आत्मा थक गई। संगमयुग में भगवान शिव को पाकर आत्मा रूपी सती कहती है, प्रभु, मुझे सच्चा ज्ञान सुनाइये जो मैं भक्ति के धक्कों से बच सकूँ। भगवान शिव सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त के सत्य ज्ञान रूपी सत्यकथा सुनाकर आत्मा को 21 जन्मों के लिए अकालमृत्यु, रोग, जरा आदि से बचा लेते हैं। यही शिव

रूप पति के लिए अनन्य भाव का प्रतिफल है।

भक्तिमार्ग में बताया गया है कि सती, भगवान शिव का जरा भी अपमान अपने मायके में भी नहीं सह सकी। एक सच्ची पतिव्रता पति का अपमान न करती है, न सहती है, चाहे अपमान करने वाले उसके कितने भी समीप के हों। संगमयुग में हम भी नित शिवमहिमा में डूबे रहते हैं, इससे विपरीत भाव को हमारे मन में रिंचक भी स्थान नहीं है, यही हमारा पतिव्रत्य है। भगवान शिव से बेमुख लोग, चाहे कितने भी तथाकथित अपने हों, पराए ही हैं। ऐसी एकनिष्ठ लगन वाली आत्माएं ही सच्ची सतियाँ, सच्ची पार्वतियाँ हैं

भारतीय पौराणिक इतिहास में उपरोक्त के अलावा अनगिनत पतिव्रता नारियाँ वर्णित हैं। संगमयुग में, आत्मा का एक परमात्मा से एकनिष्ठ प्रेम होता है परन्तु द्वापरयुग से, सांसारिक जीवन में परमात्मा को ना पाकर नारियों ने देहधारी पतियों पर ही यह भाव आरोपित करना शुरू कर दिया। इतने ऊँचे भाव के भार को सम्भालने में बहुत कम पति ही योग्य और समर्थ सिद्ध हो पाए। इसलिए धीरे-धीरे आगे बढ़ते काल-क्रम में यह ऊँचा भाव समाप्त होते-होते तिरोहित ही हो गया। अब भगवान पुन: अवतरित होकर आत्माओं को इस सर्वोच्च भाव में पुन: टिका रहे हैं कि वे एक पिता परमात्मा से सम्पूर्ण निष्ठा के साथ मन जोड़ लें। ऐसा करने से सर्व पापों से मुक्त हो जाएँगी। ■■■

मन का फास्टफूड

■■■ ब्रह्माकुमारी गीता बहन, शान्तिवन

हमारा अस्तित्व इस दुनिया में शरीर और आत्मा से बना है। शरीर भौतिकता का प्रतीक है तो आत्मा चैतन्यता का प्रतीक है।

विचार तरंगों का भोजन की गुणवत्ता पर प्रभाव

प्रकृति के पाँच तत्वों से बने शरीर का रखरखाव भी पाँच तत्वों से ही होता है। शरीर जिन रसायनो, क्षारों, पोषक तत्वों से बना है वो हमें भिन्न-भिन्न प्रकार के अनाज, सब्जियों, फलों से और उनसे बने व्यंजनों से प्राप्त होते हैं। उन व्यंजनों से स्वादानुभूति, रसानुभूति, शक्ति अनुभूति भी होती है। भोजन एक महत्वपूर्ण घटक है जो हमारे शरीर को दुरुस्त-सक्षम बनाये रखता है। बेशक भोजन बनाते समय जिस प्रकार की हमारी मनोस्थिति, विचार तरंगें, घर का माहौल, आपसी संबंधों की स्थिति होती है उसका भी भोजन की गुणवत्ता पर पूरा प्रभाव पड़ता है।

जैसा अन्न वैसा मन

भारत की आदिकालीन आध्यात्मिक संस्कृति भोजन से सम्बन्धित ये शिक्षा हमें देती है कि जैसा अन्न वैसा मन, जैसा पानी वैसी वाणी, अन्न शुध्धौ सत्वशुद्धि। प्राचीन परिवार प्रणाली में पुरुष धन कमाने घर से बाहर नौकरी-धंधा करने जाते और महिलायें घर-परिवार-भोजन आदि को संभालने, सुसंस्कारित करने का कार्य करती थी। घर, भोजन, सम्बन्ध – इनको इतना महत्व दिया जाता था कि माँ-बहनों का काफी समय बल्कि पूरी जिंदगी कुटुम्ब पालना, संस्कार सिंचन और चरित्र निर्माण में सार्थक होती थी।

इन्द्रिय रसों की ओर बढ़ता आकर्षण

आज मनुष्यात्माएँ अपने मूल चैतन्य आत्मस्वरूप को भूल गयी हैं, परिणामस्वरूप, खुद को शरीर समझने लगी है, जिस कारण अब पेट-पोषण, इन्द्रिय रसों की तुष्टि, शारीरिक भोगों, वेशभूषाओं, साजसज्जा के प्रति अधिक ध्यान जाने लगा है। अधिकतर उनका समय, शक्ति, धन इन्हीं के प्रति खर्च हो रहा है और इन्हीं चीजों में नवीनता, विविधता, बहुलता, व्यापकता लाने में लगा है। मानव-मन वैविध्यप्रिय है। जो चीजें आज वो खाता है, कल उसी में नवीनता लाना चाहता है। जो साधन आज घर में बसाता है, थोड़े दिनों में उससे ऊब जाता है और दूसरा खरीदकर ले आता है। कुछ और, कुछ और चाहिए की चाहना बढ़ गई है। मानव-मन की ऐसी इच्छाओं, रसों और रुचियों को समझ जाने वाले लोग, व्यापारिक बुद्धि से लाभ उठाने का प्रयास करते हैं। इस कारण आज लोगों के घर साधनों से भर रहे हैं और इच्छाएँ तो अबाधित रूप से बढ़ती ही जाती हैं। इनकी पूर्ति करने के लिए मानव जीवन व्यस्त होता जा रहा है।

होटल व्यवसायी भूल गए हैं सामाजिक जिम्मेवारी जन-स्वास्थ्य की

पहले घर का एक सदस्य कमाता था और पूरा परिवार पलता था। अब जीवन में सजावट, दिखावट इतने बढ़ गए कि घर के हर नर-नारी को कमाने जाना जरूरी माना जाने लगा है। भले अनैतिक तरीके से कमायेंगे लेकिन फैशनपरस्ती छोड़ेंगे नहीं। घर संभालना, बच्चे पालना, भोजन बनाना, मसाले लाना, साफ करना आदि में काफी समय लगाना पड़ता है तो अब लोग सोचने लगे हैं कि ये समय भी धन कमाने में क्यों न लगा दिया जाए। भोजन तो होटलों से भी मंगा लिया जा सकता है। भोजन बनाने में समय लगाना, समय को व्यर्थ करना समझा जाने लगा है। भोजन बनाने में समय देना फिजूल है – ऐसा समझने से भी आगे अब तो ये मानसिकता बन गई है कि होटल में या घर में बैठकर भोजन करना पड़े, उसमें भी समय क्यों खर्च करें? क्यों नहीं बना-बनाया भोजन पैक कराकर ले लिया जाये और मुसाफिरी करते हुए, ऑफिस में काम करते हुए भी खाया जाये ताकि कमाई करने में ज्यादा समय दे सकें। भोजन सहज ही बन जाये, जल्दी ही बन जाये और सीधा मुँह में डाल दिया जाये, बस, इसी मानसिकता ने 'फास्टफूड' को जन्म दिया है। आज उसी का बोलबाला हो रहा है। होटल व्यवसायी भी खूब मिर्च-मसाले डालकर, स्वादेन्द्रिय को उत्तेजित करने वाले, चटपटे व्यंजन बनाकर लोगों को ललचा कर आकर्षित कर रहे हैं। लोगों का स्वास्थ्य बने या बिगड़े, इस सामाजिक जिम्मेवारी को वे भूला बैठे हैं। अंतत: इस प्रकार के खानपान से अनेक बिमारियाँ और तकलीफें बढ़ गई हैं।

जरूरी है नकारात्मकता के बीज का नाश

जैसा शरीर के बारे में हो रहा है, ऐसा ही आज मन के भोजन – आत्मखुराक के सम्बन्ध में भी हो रहा है। चैतन्यशक्ति से सम्बन्धित मूल सनातन सत्यों का ज्ञान अर्थात् ठोस आध्यात्मिक ज्ञान सुनने, समझने और धारण करने के लिए कोई न समय देना चाहता है, न

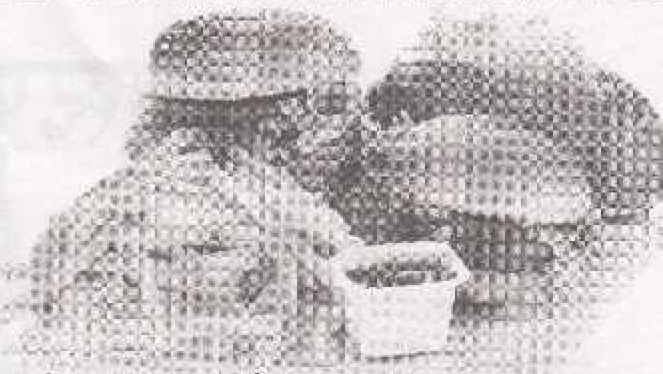

मेहनत करना चाहता है। सत्य ज्ञान हमारे आंतरिक जगत का स्पष्ट चित्र बनाकर दिखाता है। मूल सत्य ज्ञान की शक्ति ही आत्मा में अज्ञानता जनित कमजोरियों, विकृतियों को भस्मीभुत कर सकती है। लेकिन हम स्वयं को बदलना नहीं चाहते, जैसे हैं वैसे ही रहने में सुविधा महसूस करते हैं और त्याग, तपस्या का कोई पुरुषार्थ नहीं करना चाहते। आध्यात्मिकता से दुखों का नितांत समापन हो सकता है, फिर भी वह मार्ग हम जल्दी स्वीकार करने को तैयार नहीं होते। अब सोचने की बात है – जिस बीज के कारण नकारात्मकता पनप कर फल रही है और हम दुखी, रोगी हो रहे हैं, उसे निकालेंगे नहीं तो हम रोग-शोक, दुख-दर्द से मुक्त कैसे होंगे? ऊपर-ऊपर से घास काटेंगे तो थोड़े दिनों के लिए तो बगीचा सुदर बन जायेगा परन्तु अनुकूल वातावरण मिलते ही फिर वापस घासफूस उग आयेगी। इसी प्रकार, अल्प समय के लिए, बाह्य स्तर पर व्यवहार में परिवर्तन करने से हम सदाकाल के लिये आधि-व्याधि-उपाधि को दूर नहीं कर सकते।

उतर गए 'स्व' से 'पर' प्रति

हम सभी बातों में औरों को परिवर्तन करना पसंद करते हैं परन्तु स्वपरिवर्तन की बात आती है तो हमारा प्रतिभाव उमंग-उत्साह वाला और शक्तिशाली नहीं होता है। हम किसी भी परिस्थिति की तह में जाकर, जड़ों से परिवर्तन नहीं करते और ऊपरी रूप से ठीक करके चलते रहते हैं। स्वाभाविक है कि हम आध्यात्मिकता के स्तर से उतर गये हैं और धर्म-संप्रदाय जनित नैतिकता पर आ गये हैं। हर धर्म-संप्रदाय के अपने नीति-नियम हैं,

हरेक का अपना नित्यक्रम और उपासना पद्धति है। हरेक ने अपने चिंतन अनुसार शास्त्र रच लिये और उन्हीं को यथार्थ बताकर प्रचार-प्रसार करने लगे। आध्यात्मिकता हमें सीधा स्व पर और परम शक्ति परमात्मा पर केन्द्रित करती है। वहाँ से हटकर हम थोड़ा स्थूल और बाह्य क्रियाकलापों पर आ गये। परमशक्ति से सम्बन्ध जोड़कर पूर्ण और सर्वोच्च प्राप्ति करने के पुरुषार्थी बनने के बजाय परमात्मा की ही याद से महान बने हुए धर्मात्माओं, महात्माओं से जुड़ गये और उनकी साधना की शक्ति से स्वयं के ताप-संताप दूर करने के मुरादी बन गये। स्वयं को सत्य-शुद्ध बनाने की मेहनत करने के बजाय परायी मदद-कृपा पर जीवन को चलाते रहने का सहज परन्तु परावलम्बी मार्ग पसंद कर बैठे। हम 'स्व' से 'पर' प्रति उतर गये। एक बार अधः गति पसंद करने से हम और ज्यादा ही पतनोन्मुखी बनने लगे।

धर्म के नाम पर शोषण

बिना मेहनत, बिना साधना-तपस्या, बिना त्याग-वैराग्य प्राप्ति कर लेने की लालच वृत्ति आ गयी। दूसरी ओर धर्म के नाम पर मनगढ़ंत, काल्पनिक क्रियाकांडों की वृद्धि करने वाले लोग भी मैदान में आ गये। जहाँ लोभी होते हैं वहाँ धूर्त लोगों की भी कमी नहीं रहती। वे भी परमात्मा, धर्म, भक्ति, योग के नाम पर भय-लालच देकर बाह्याचार और क्रियाकांड के दुकान खोल आत्मबलहीन, विवेकशून्य लोगों का शोषण करने लगे। ईश्वर, भक्ति, धर्म, आत्मकल्याण के नाम पर इतने क्रियाकांड करने में समय भी बहुत देना पड़े। अब एक तरफ इन्द्रियलोलुप भोगवादी जीवन पद्धति और दूसरी ओर किया-विधियों से भरी, साधन आधारित धार्मिक रीति-रस्में, कैसे दोनों का जीवन में मेल बैठे?

अब लोग नैतिकता, धार्मिकता के स्तर से उतर कर सिर्फ 'अपना गृहस्थ धर्म निभाओ, कर्त्तव्य अदा करो, कर्म ही पूजा है' – के विचारों पर आ गये। योग-तपस्या छूट गये, सिर्फ फर्जअदाई पर आ गये। परन्तु देहअभिमानी मनुष्य दिनप्रतिदिन ज्यादा स्वार्थी-स्वकेन्द्री होने लगे। खुद खाओ-पीओ और मौज करो, दूसरों की परवाह क्या करनी? मानवता मृतप्रायः हो गई, दानवता सिर पर चढ़ बैठी। विश्व परिवार की भावना, देशभक्ति, मानव सेवा तो दूर रही – खुद के मातपिता, बंधु-भगिनियों के प्रति भी मानवीय व्यवहार नहीं रहा है।

मिलावटी फास्ट फूड के आदती

प्रतिष्ठा के हिसाब से कोई न कोई धर्म या सेवा-संस्था से जुड़े रहो, धार्मिक आयोजन से खुद की ही वाही-वाही करो और दिखावे मात्र के लिए कथा-प्रवचन सुनो – इस निम्न स्तर पर समाज आ गया है। ज्ञान के नाम पर कनरस लाने वाली कथा-कहानियाँ, शेरो-शायरियाँ, चुटकुले सुनाये जा रहे हैं और लोग उसी में भीड़ मचाये जा रहे हैं क्योंकि करना तो कुछ है नहीं, सुनने का स्वांग रचना है। लोगों को भ्रम बना रहता है कि हम भी धर्म के नाम कुछ कर रहे हैं। सुनो सबकी, करो किसी की नहीं। साधन और मार्ग भले ही गलत हों, अनैतिक तौर-तरीकों से कमाओ, दान कर प्रसिद्धि पाओ, बाकी जीवन को भोगों की गर्त में धकेलते जाओ। देखिए, शुद्ध-सत्य ज्ञान की पौष्टिक खुराक को छोड़ आज हम मिलावट-बनावट वाले मनमति फास्ट फूड के आदती बन गये हैं।

सत्यान्वेषी बनें – समय की पुकार

सुनने में रस आवे और धारण करने की शक्ति का विकास न हो तो ऐसा ज्ञान हमारे में और ही मिथ्याभिमान, मैं-पन, दंभ, अहम्, वहम की बीमारियाँ पैदा करता है। सत्य ज्ञान हमें नम्र, सेवाभावी, त्यागी-तपस्वी, परोपकारी, अन्तर्मुखी बनाता है। आज पतन का परिणाम आ चुका है। संसार पूर्णतः घोर कलियुग बन गया है। मन को केवल बहलाने वाले, धर्म के ओढ़े हुए जूठे कलेवर को और सत्वरहित भूसे समान फास्टफूड को छोड़ना अब जरूरी बन गया है। सत्य, शुद्धिप्रदायक आचार-विचार को ही हम आत्मभोजन बनायें। सत्यान्वेषी, सत्याभ्यासी बनें और सत्य संसार का निर्माण करने में परमात्मा पिता के मददगार बन जायें – यही समय की पुकार है। ■■■

दुर्भावना को सद्भावना में कैसे बदलें?

■■■ ब्रह्माकुमार विनायक, सोलार प्लान्ट, शांतिवन

एक व्यक्ति लोगों के साथ मधुरता से व्यवहार नहीं करता था। चाहते हुए भी वह मिलनसार नहीं बन पाया। निराश होकर एक दिन उस व्यक्ति अर्थात् आत्मा ने अपने सभी साथियों अर्थात् आँख, कान, जीभ, हाथ, पैर, मन, बुद्धि, संस्कार, भावना आदि को इस चर्चा के लिए आमंत्रित किया कि कड़ुवेपन को मधुरता में कैसे बदलें।

आत्मा ने सबसे पहले कर्मेंद्रियों से पूछा, आजकल आप लोगों का चलन ठीक नहीं है। कोई सामने आता है तो आंख से आंख मिलाते नहीं हो, नमस्ते बोलने के लिए न मुँह खुलता है, न अभिवादन में हाथ उठता है, कान सुनी-अनसुनी कर देते हैं, पैर सामने का रास्ता छोड़ इधर-उधर गलियों में चले जाते हैं। आप पांचों को इतना अहंकार क्यों है? लोग मेरे बारे में क्या सोचते होंगे?

पांचों ने हाथ जोड़कर कहा, आपको संतुष्ट रखने के लिए हम मेहनत करके भी आपकी सेवा करते हैं, तो अहंकार किस बात का? भावना को पूछिए, वह विघ्न डालती है। आत्मा को तब याद आया कि आजकल किसी से मिलते वक्त उनके बारे में कटु भावनाएँ बार-बार प्रकट होती हैं।

बुलाओ भावना को, आत्मा ने आदेश दिया। भावना सभा में आई। भावना की कुरूप आकृति देख आत्मा चौंक गयी। वास्तव में भावना, आत्मा की प्रतिनिधि थी। बहुत सुंदर, शिष्ट, दयालु और कल्याणकारी थी। किसी से भी मिलना है, शुभकार्य करना है, संगठन जोड़ना है, तो शुभारम्भ भावना से ही होता था। इसलिए ही उसको प्यार से सद्भावना कहकर पुकारते थे। लेकिन आज उसका उग्र रूप देख आत्मा ने समझ लिया कि संबंधों में तनाव आने का मूल कारण यही है। अब आत्मा इस चिंता में डूब गई कि भावना को ठीक कैसे करें।

आत्मा ने कहा, सद्भावना, क्या तुम बीमार हो?

भावना ने कहा, आत्मन, आप ने मुझे नहीं पहचाना? सद्भावना नहीं, मैं तो दुर्भावना हूँ। यह सुनकर आत्मा को बहुत खेद हुआ। भावना खुद का नाम तक भूल बैठी है, तो कर्तव्य क्या याद रखेगी?

आत्मा ने कहा, भावना, आप इतनी विकराल कैसे बन गई हो? खान-पान ठीक है ना?

भावना ने कहा, आत्मन, मेरा आहार संकल्प है और खिलाने वाली है बुद्धि लेकिन, क्या करूँ? वह मुझे हमेशा अशुद्ध भोजन ही खिलाती है। शुद्ध आहार मिले तब तो सुंदर बनूँ।

अब आत्मा की नजर बुद्धि पर पड़ी। बुद्धि ने कहा, आत्मन, मैं तो हर संकल्प को परखती हूँ लेकिन हजार में से एक-दो ही शुभ रहते हैं बाकी सारे अशुभ, व्यर्थ और साधारण ही निकलते हैं तो मैं क्या करूँ? आप मन से पूछिए कि वह इतने खराब संकल्प क्यों उत्पन्न करता है?

मन ने कहा, मैं तो चाहता हूँ कि सदा शुभ संकल्प

ही करूं लेकिन अगर कुआँ ही दूषित हो तो घड़े में भी वैसा ही पानी भरेगा ना। संस्कार ही इतने मैले हैं कि अच्छे संकल्प उठने ही नहीं देते हैं। मेरी शक्ति उनके सामने कमजोर पड़ जाती है। आप संस्कारों को कहो कि वे अपना आसुरीपना छोड़ें।

एक संस्कार उठकर सभा के बीच आया। उसके आते ही सभी ने अपनी-अपनी नाक बंद कर ली। वह बहुत पुराना था, जहाँ-तहाँ सड़ गया था इसलिए उसमें से बहुत बदबू आ रही थी।

आत्मा ने पूछा, संस्कार, पहले यह बताओ, तुम इतने गंदे क्यों हो? नहाते नहीं हो क्या?

संस्कार ने कहा, आत्मन, माफ कीजिए, मैं खुद नहा नहीं सकता हूँ। आपके पिता शिव परमात्मा ने बुद्धि को मेरी सफाई की जिम्मेदारी दी है। शिवपिता को निरंतर याद करने का आदेश भी बुद्धि को मिला है। याद एक तार है। उस तार के द्वारा शिवपिता अपनी शक्ति का प्रयोग कर मेरी सफाई करते हैं लेकिन, किसको बताऊँ, बुद्धि बहुत ही नटखट, चंचल है। दीर्घ समय तक एकाग्रता से बैठ शिवपिता को याद नहीं करती है। मेरी क्या गलती है? शिवपिता भी क्या कर सकते हैं? यह सुनकर बुद्धि ने फट से उत्तर दिया, आत्मन, मैं जैसे ही बैठकर याद करना शुरू करती हूँ, तुरंत ही मन व्यर्थ संकल्पों का तूफान मचाकर मेरी एकाग्रता को हिला देता है। आप उसको कहिए कि ऐसा न करे। मन व्यग्र हो कर बोला, मैं नहीं करता हूँ भाई, ये पुराना संस्कार मेरे में तूफान भरता है। इस प्रकार सभी एक-दूसरे पर उंगली उठाते हुए हंगामा करने लगे।

उसी वक्त पीछे से एक बहुत ही कमजोर आवाज आई, हे आत्मन, मेरी भी जरा सुन लो। सभी ने पीछे मुड़कर देखा तो वहाँ एक बहुत ही दुबली-पतली, निर्बल, बीमार आकृति बैठी थी। बहुत ध्यान से देखने के बाद ही पता चल पाया था कि वहाँ कोई है।

आत्मा ने पूछा, भाई, तुम कौन हो?

उसने धीरे-धीरे बोला, मैं साधना हूँ। आप के पिता शिव परमात्मा प्यार से मुझे पुरुषार्थ कहकर पुकारते हैं।

आत्मन ने पूछा, तुम इतनी कमजोर, बीमार क्यों हो?

साधना ने कहा, आत्मन, मेरा श्वास है स्व परिवर्तन, मेरा आहार है लगन, दवाई है एकाग्रता व गंभीरता तथा परहेज है वैराग। इन चारों से मैं शक्तिशाली बनती हूँ लेकिन व्यर्थ बातें, मनोरंजन, अलबेलापन आदि मदिरा पिलाकर मुझे कमजोर बनाया जा रहा है। आलस्य नाम की महाबीमारी भी मुझे लग चुकी है।

आत्मन ने पूछा, कौन है वह जिसने आपके साथ ऐसा व्यवहार किया?

साधना ने सर नीचे करते हुए कहा, माफ कीजिए आत्मन, दूसरा कोई नहीं, वह आप ही हैं।

आत्मा को आश्चर्य हुआ, मैं?

साधना ने कहा, हाँ आत्मन, आप राजा हैं और ये सारे आपकी आज्ञा मानने वाले हैं। अपनी मर्जी से ये कुछ कर नहीं सकते इसलिए निर्दोष हैं। केवल आप ही दोषी हैं।

आत्मा ने हैरान होकर पूछा, मेरा दोष क्या है, विस्तार से बताओ?

साधना ने बताया, आत्मन, आप के पास इच्छा शक्ति नाम का बड़े से बड़ा अस्त्र है। अंग्रेजी में उसको विल पॉवर कहते हैं। मन-बुद्धि के नियंत्रण से भी पार केवल आप ही उसको चला सकते हैं। उसके विधिपूर्वक प्रयोग से निरंतर सफलता पा सकते हैं परंतु, आप उस अस्त्र को स्वपरिवर्तन के बजाय व्यर्थ बातों, मनोरंजन और बदला लेने के लिए इस्तेमाल कर रहे हो। अगर उस इच्छा शक्ति को साधना में लगाओ तो पता है क्या कमाल होगा?

आत्मन ने आश्चर्यचकित होकर पूछा, क्या होगा?

साधना ने कहा, आत्मन, अपनी इच्छा शक्ति या लगन को स्व परिवर्तन की साधना में लगा दो तो मैं शक्तिशाली बनूंगी। मेरी शक्ति, मन और बुद्धि में प्रवाहित होगी इससे मन, मनमनाभव की अवस्था में मगन होगा और बुद्धि शिवपिता को निरंतर याद करने लगेगी। याद के तार द्वारा शिवपिता, संस्कार के अंदर भरी सारी

आसुरियता को भस्म कर देंगे और दैवी गुण व शक्तियों की धारणा भी करा देंगे। संस्कार शुद्ध होने से मन में शुभ संकल्प करने की ताकत आएगी। शुभ संकल्प, भावना की बीमारियों के लिए एक रामबाण दवाई है। उस दवाई से दुर्भावना फिर से सुंदर सद्भावना में बदल जाएगी। सद्भावना की शक्ति से आंखों में स्नेह प्रकट होगा, मुँह पर मुस्कराहट दिखाई देगी, जीभ से प्रशंसा के बोल निकलेंगे, पैर औरों की तरफ उमंग से बढ़ेंगे और दोनों हाथ पसर कर सामने वाले को प्रेम से गले लगाएँगे। यही तो आपका सपना है ना?

आत्मा ने आँसू पोंछते हुए कहा, हाँ साधना, पर यह लगन कैसे उत्पन्न होती है?

साधना ने कहा, स्व परिवर्तन की तीव्र चाहना रखने से तथा शिवपिता की ज्ञान मुरली को रोज सुनने से लगन उत्पन्न होती है। मुरली को बार-बार पढ़ने से, उस ज्ञान का विचार सागर मंथन करने से लगन, अग्नि का रूप ले लेती है। यह लगन की अग्नि, योगाग्नि को तेज करती है अर्थात् शिवपिता को याद करने की विधि में गहराई लाती है। योगाग्नि ही दुर्भावना को सद्भावना में परिवर्तन करने की भट्ठी है। अगर परिवर्तन दिखाई नहीं देता है तो समझो कि स्वपरिवर्तन करने की लगन कमजोर है। पहले उसको तीव्र और शक्तिशाली बनाओ। व्यर्थ, परचिंतन, दुनियावी मनोरंजन आदि इस अग्नि को बुझाने वाले पानी हैं, इनसे दूर रहो। केवल एक ही शब्द कदम-कदम पर याद रखो, स्व परिवर्तन की लगन।

आत्मन हाथ जोड़ते हुए कहते हैं, हे साधना, मैं जरूर स्व परिवर्तन की लगन और शिवपिता की याद से आप को शक्तिशाली बनाऊँगा, लेकिन आप बहुत कमजोर हो गई हो, जल्द से जल्द कैसे तुम्हें ठीक करें?

साधना ने बताया, आत्मन, इस के लिए ही रूहानी सर्जन शिवपिता ने 'अब नहीं तो कब नहीं' नाम का इंजेक्शन दिया है। वह लगा दो तो तुरंत ही मैं दुरुस्त बन भावना को स्वस्थ, सुंदर बनाकर दिखाऊँगी। ■■■

हे युवा! उठो

ब्रह्माकुमारी उषा ठाकुर, मीरा सोसायटी, पुणे

हे युवा! उठो, त्यागो निद्रा, भोर की लाली छाई है।
स्वर्णिम प्रभात अब दूर नहीं, ये सन्देशा लाई है।।

तुम आशा की एक नई किरण हो, अँधियारे में हो प्रकाश।
हे नवयुग के कर्णधार! साहस-उत्साह के तुम पर्याय।।
तोड़ दो दुःख के अँधियारों को, घोर घटा जो छाई है।
स्वर्णिम प्रभात अब दूर नहीं, ये सन्देशा लाई है।।

जीवन है एक महासमर, पग-पग पर संकट आयेंगे।
निर्भय और हिम्मतवान यहाँ जो, वही सफल हो पायेंगे।।
आगे बढ़ने वालों को ये दुनिया रोक न पाई है।
स्वर्णिम प्रभात अब दूर नहीं, ये सन्देशा लाई है।।

अब छोड़ पुरानी राहों को तुम, नवपथ का निर्माण करो।
ये दुनिया बन जाये अनुगामी, ऐसा नया कमाल करो।।
जग तेरी ओर निहारे, जब कोई भी विपदा आई है।
स्वर्णिम प्रभात अब दूर नहीं, ये सन्देशा लाई है।।

गांधी के सपनों का भारत, साकार करो निज कर्मों से।
मानवता का पाठ पढ़ो अब, उठकर दैहिक धर्मों से।।
सबसे प्यार करो तुम तो आपस में भाई-भाई हो।
स्वर्णिम प्रभात अब दूर नहीं, ये सन्देशा लाई है।।

नई सृष्टि की रचना में, शिव ने तेरा आह्वान किया।
युग-परिवर्तन की वेला में, ये समय भी तुम्हें पुकार रहा।।
तन-मन-धन सब सफल करो, जो अतुल सम्पदा पाई है।
स्वर्णिम प्रभात अब दूर नहीं, ये सन्देशा लाई है।।

किधर जा रही हो?

■■■ ब्रह्माकुमारी रुचि, इन्दौर (म.प्र.)

ठहर जाओ बहना! किधर जा रही हो? किधर जा रही हो? वो मंजिल नहीं, तुम जिधर जा रही हो।

जी हाँ यह निमंत्रण इन्दौर के 'शक्ति निकेतन कन्या छात्रावास' की कन्या, उन समस्त हमजिंस कुमारियों के लिये दे रही है जो अपनी अपरिपक्व सोच एव निर्णय के कारण श्रेष्ठ भविष्य बनाने की जिज्ञासा लिये अनुपयुक्त मार्ग अथवा संस्थान का चयन कर रही हैं, भटक रही हैं।

अब प्रश्न उठता है कि इस छोटी उम्र की कन्या में इतनी उदारता एवं विशाल बुद्धि कहाँ से आई तथा सभी कन्याओं का शक्ति निकेतन में आह्वान करने का क्या प्रयोजन? इसका सहज उत्तर है कि लौकिक पढ़ाई के साथ-साथ शक्ति निकेतन की कन्याओं को जो ईश्वरीय आध्यात्मिक ज्ञान दिया जाता है उससे उनका जीवन आध्यात्मिक एवं मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत हो जाता है और जिसका जीवन, मूल्यों से भरपूर हो, वो भला निःस्वार्थ कल्याण की भावना से रिक्त कैसे रह सकता है?

अब हम जानते हैं कि शक्ति निकेतन कैसा है? कहाँ है? इसकी विशिष्ट महिमा क्या है? दिव्यता और शालीनता की प्रतिमूर्ति महारानी देवी अहिल्या की तपोभूमि मालवा के इन्दौर शहर में न्यू पलासिया के क्षेत्र मे स्थित ओमशान्ति भवन। इसके पावन प्रांगण में अपने अस्तित्व को संजोए हुए विराजमान है चमकता-दमकता 'शक्ति-निकेतन'।

परिचय – शक्ति निकेतन की स्थापना सन् 1983 में हुई। इसके जन्मदाता इन्दौर जोन के पूर्व क्षेत्रीय निदेशक ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश जी थे, जिनके शुभ संकल्पों, अथक प्रयासों एवं सर्वश्रेष्ठ अनुभवी मार्गदर्शन में ये छात्रावास दिन दूनी, रात चौगुनी उन्नति करता, आगे बढ़ता रहा। छात्रावास में कक्षा 6ठवीं से स्नातक स्तर (बी.ए., बी.कॉम.) तक की कन्यायें अध्ययनरत हैं। वर्तमान समय छात्रावास में भारत के प्रमुख प्रांतों जैसे दिल्ली, मुम्बई, कोलकोता, मद्रास, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, उ.प्र., म.प्र., छत्तीसगढ़, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, उड़ीसा, केरल, कर्नाटक, उत्तराखण्ड, झारखण्ड, त्रिपुरा आदि की एवं नेपाल व बांग्लादेश की कुल 150 कन्यायें निवास करती हैं।

उद्देश्य - शक्ति निकेतन का एक मात्र उद्देश्य है स्वर्णिम भारत के निर्माण हेतु प्रयास

- जो कल के भारत का भविष्य बनने वाली हैं उन सैकड़ों युवा कन्याओं में उनकी किशोरावस्था में सुसंस्कारों का बीजारोपण करना।
- बचपन से ही उनके नैतिक व चारित्रिक विकास पर ध्यान देकर उन्हें चरित्रवान बनाना।
- 'स्वावलंबन की एक झलक पर है कुबेर का धन न्यौछावर' इस उक्ति को चरितार्थ करते हुए यहाँ रहने वाली कुमारियों को पहले दिन से ही स्वावलंबी जीवन का प्रशिक्षण दिया जाता है। कुमारियाँ अपनी दिनचर्या के व्यक्तिगत कार्यों को स्वयं ही करती हैं जैसे – अपने कमरे की, अपने कपड़ों की, अपने खाने के बर्तनों की सफाई, अपने बाल धोना आदि-आदि। इससे एक तो वे कार्य करने की विधि सीखती हैं, दूसरा उनकी शारीरिक क्षमता में वृद्धि होती है।
- संयम और नियम मानव जीवन की शोभा है इसलिये यहाँ प्रातःकाल से रात्रि सोने तक अनुशासनबद्ध नियमित दिनचर्या का निर्वाह करना होता है।
- कुमारियों का आध्यात्मिक सशक्तिकरण।

दिनचर्या – यहाँ कुमारियाँ प्रतिदिन प्रातः चार बजे उठकर राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करती हैं। नित्य कर्म, स्नान, व्यायाम आदि करके छह बजे आध्यात्मिक ज्ञान-मुरली का श्रवण करती हैं। इसके पश्चात् इन्दौर शहर के विभिन्न शिक्षण संस्थानों में लौकिक अध्ययन करने जाती हैं। विद्यालय से आने के बाद कन्यायें भोजन कर एवं थोड़ी देर विश्राम करके नियमित स्वाध्याय (पठन-पाठन) करती हैं। प्रतिदिन स्कूल एवं कॉलेजों में करायी जाने वाली पढ़ाई की दोहराई कक्षा अनुसार समूहबद्ध रूप से करवायी जाती है, इस कारण छात्रावास का परीक्षा परिणाम भी प्रतिवर्ष लगभग शत-प्रतिशत रहता है। प्रतिदिन कम से कम एक घंटा ईश्वरीय सेवा करना इनकी दिनचर्या का अभिन्न अंग है। कन्याओं को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से, साफ-सफाई करना, भोजन बनाना, सब्जी काटना, रोटी बनाना आदि कार्यों में चार्ट अनुसार इनकी सेवा लगाई जाती है। विभिन्न समूहों में, विभिन्न कार्यों की जिम्मेवारी कन्याओं को सौंप दी जाती है जिससे शक्ति निकेतन की साज-सज्जा, सफाई एवं भंडारे से संबंधित सभी कार्य सफलतापूर्वक संचालित होते रहते हैं। दूसरी ओर; सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, गृहसज्जा, आवासीय रखरखाव, मेहमानवाजी, पाक-कला आदि में भी कन्यायें निपुण हो जाती हैं। सभी कन्यायें पुनः शाम 7.00 से 7.30 बजे संगठित रूप से परमात्मा की शक्तिशाली स्मृति में बैठती हैं। तत्पश्चात् 7.30 बजे दिनभर का विवरण लिया जाता है और सही-गलत के लिए उचित मार्गदर्शन दिया जाता है। फिर भोजन करके, लौकिक या अलौकिक पढ़ाई करके, दस बजे पुनः अमृतवेले को सफ़ल करने के शुभ संकल्प को लेकर बाबा की मीठी यादों में सो जाती हैं।

वर्ष 1983 से अब तक इस रूहानी उपवन से निकली करीब 600 कलियाँ, फूल बनकर देश-विदेश में ज्ञान-योग की खुशबू फैला रही हैं। यहाँ प्रस्तुत है शक्ति निकेतन के पावन उद्‌गम से निकली ब्र.कु. रुकमणि का संक्षिप्त अनुभव –

''मेरा नाम रुकमणि है, मैंने इन्दौर हॉस्टल में कक्षा 6ठी से लेकर के कक्षा 12वीं तक की पढ़ाई की। मेरे मम्मी-पापा दुबई में रहते थे। उन्होंने मेरा दाखिला हॉस्टल में करवाया। मेरी दो और लौकिक बहनें भी हॉस्टल में ही पढ़ी हैं। पिछले 18 सालों से मैं सेन्टर पर हूँ, कुछ समय दुबई में रही और अभी दुबई के पास बेहरीन में रहती हूँ।

मैंने होस्टल में रहकर बहुत कुछ सीखा। वह मेरा घर ही था। माता-पिता के पास तो मैं ना के बराबर रही थी, पूरी पालना मुझे हॉस्टल में मिली। बाबा क्या है, ज्ञान क्या है, सबकुछ वहाँ सीखा। वहाँ पर निःस्वार्थ प्यार मिलता है। हम कैसे भी हों, हमारे अंदर कितनी भी कमजोरियाँ हों, बचपना हो, जिद्द का संस्कार हो लेकिन दीदी हमें आगे बढ़ाने में बहुत मदद करते हैं। उन्होंने हमें ज्ञान के मार्ग पर चलना सिखाया, जीवन को अच्छा बनाना सिखाया। हम भावनात्मक, मानसिक, शारीरिक तौर पर कैसे आत्म-निर्भर बनें, यह बात मैंने वहाँ सीखी।''

शक्ति निकेतन (इन्दौर हॉस्टल) ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा संचालित है। सम्पूर्ण देख-रेख बहनों द्वारा की जाती है। आज के युग में दो बच्चों की परवरिश करना दूभर है, यहाँ 150 बच्चियों की परवरिश नैतिकता एवं चरित्रता के साथ की जाती है। आज के अधिकतर नौनिहाल मोबाइल, कम्प्यूटर जैसी चकाचौंध की दुनिया में डूबे हैं और जिंदगी का सदुपयोग नहीं कर पा रहे हैं। वहीं दूसरी ओर, ये नन्हें फरिश्ते, नई दुनिया की स्थापना में संलग्न, आसमान में सुराख करने जैसा अद्‌भुत कार्य कर रहे हैं।

हॉस्टल में नई कन्याओं के प्रवेश हेतु कृपया जनवरी से मई तक सम्पर्क करें। प्रवेश की प्रक्रिया मई-जून माह से ही प्रारंभ हो जाती है। ■■■

पता : ब्र.कु. करुणा
शक्ति निकेतन, ओमशान्ति भवन
ज्ञान शिखर, गेट नम्बर 2, न्यू पलासिया
इन्दौर– 152001 (म.प्र.)
मोबाइल – 62601-77249, 94253-16843, 94259-03328

ईश्वरीय ज्ञान के बल से व्यक्तिगत, पारिवारिक और प्रशासनिक क्षेत्र की उपलब्धियाँ

■■■ ब्रह्माकुमार सीताराम मीना, सेवानिवृत्त आई.ए.एस., मोदीनगर (उ.प्र.)

मेरा जन्म सन् 1953 में जिला करौली की टोडा भीम तहसील के एक गाँव में गरीब किसान परिवार में हुआ। चार भाई-बहनों में मुझे ही पढ़ने का परमसौभाग्य मिला। बाल्यकाल से ही मैं पढ़ने में तेज था। मेरे शिक्षकगण भी मुझे प्रोत्साहित करते थे। पिताजी भले ही स्वयं पढ़े-लिखे नहीं थे परन्तु मुझे पढ़ाने के लिए उन्होंने कर्ज भी लिया।

हर स्कूल को किया टॉप

मैंने पाँचवीं तक की पढ़ाई गाँव के स्कूल में की। इसके बाद मामाजी मुझे अपने साथ ले गए। उनके गाँव में रहकर छठी से आठवीं तक की पढ़ाई पढ़ने के लिए प्रतिदिन साढ़े तीन कि.मी.दूर स्कूल में जाना और साढ़े तीन कि.मी.आना करता रहा। इसके बाद नौवीं और दसवीं कक्षा में जिस स्कूल में पढ़ा वह आने-जाने में 18 कि.मी.की दूरी पर था। इसके बाद 11वीं कक्षा में मण्डावर के हायर सेकेण्डरी स्कूल में दाखिला लिया। तब मैं पहली बार बस में बैठा था। मण्डावर हमारे घर से 40 कि.मी.दूर था। सात रुपये महीने के हिसाब से कमरा किराए पर लेकर हम दो सहपाठी वहीं रहकर पढ़ने लगे। अब तक की पढ़ाई के हर स्कूल को मैंने टॉप किया था। इसके बाद करौली शहर के सरकारी कॉलेज से बी.ए.किया। बी.ए.में भी कॉलेज टॉप किया। मुझे छात्रवृत्ति मिलने लगी थी जिससे मेरा खर्चा निकलने लगा था। इस प्रकार आत्मनिर्भर होकर मैंने अर्थशास्त्र में जयपुर विश्वविद्यालय से मास्टर की डिग्री हासिल कर ली।

दो प्रेरक घटनाएँ

मेरे बाल्यकाल में दो घटनाएँ ऐसी घटी थी जिन्होंने मेरे चिन्तन को प्रभावित किया और कुछ बनने के लिए लक्ष्य निर्धारित किया। पहली घटना – जब मैं चौथी क्लास में था और खेतों की मेड़ों में से होकर स्कूल में जाता था तो एक किसान कहता था, क्यों खेती को खराब करते हो, कौन-सा खसरा बाँचोगे? यह सुनकर मैंने दृढ़ संकल्प किया कि कम से कम खसरा बाँचने लायक तो बनना ही है। दूसरी घटना – जब मैं मामाजी के गाँव में पढ़ाई कर रहा था तब गाँव का ही एक रिश्तेदार, जो आई.एस.एस.बना था, वहाँ आया, उसका रुतबा देखकर मुझे आई.ए.एस. बनने की प्रेरणा हुई।

प्रतियोगिता परीक्षाओं से होता रहा पदोन्नत

आई.ए.एस.बनने की और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने की लगन मुझे लग चुकी थी। इसलिए जो भी वेकेन्सी देखता था, फार्म भर देता था और पेपर दे आता था। पहली बार सफल होने पर बैंक में क्लेरिकल पद पर नियुक्ति हुई। इसके बाद भी मैं प्रतियोगी परीक्षाएँ देता रहा और उत्तीर्ण होने पर इन्कम टैक्स इन्सपेक्टर के पद पर चुन लिया गया। मेरी पोस्टिंग उदयपुर में हो गई। फिर मैंने आई.ई.एस.की परीक्षा दी। उसमें मेरा चयन हो गया। मैं भारत सरकार का प्रथम श्रेणी का अधिकारी बन गया। इस पद पर रहते मैंने आई.ए.एस. की परीक्षा की तैयारी की। इस बार मेरा चयन आई.ए.एस.की अलाइड सर्विस (केन्द्रीय सेवा) में हो गया और मैं रेलवे में प्रथम श्रेणी का अधिकारी बन गया। इसके बाद तीसरी बार आई.ए.एस.की परीक्षा देने पर मेरा चयन आई.ए.एस.के रूप में हो गया।

जयपुर में पहली बार देखी ब्रह्माकुमारीज की चित्र प्रदर्शनी

जब मैं जयपुर में एम.ए.कर रहा था तब रामनिवास बाग में ब्रह्माकुमारियों की चरित्र निर्माण आध्यात्मिक

प्रदर्शनी का अवलोकन किया था। उसमें एक बात बुद्धि को स्वीकार नहीं हुई, वह थी कि विश्व का पूर्ण परिवर्तन होने से पहले विनाशकारी घटनाएँ घटने वाली हैं। हूबहू ड्रामा के पुनरावर्तन का सिद्धांत भी बुद्धि ने स्वीकार नहीं किया। जब उदयपुर आयकर निरीक्षक के पद पर था तब वहाँ ब्रह्माकुमारीज के विपरीत बातें बहुत सुनी। उन्हीं दिनों आयकर वसूली के सिलसिले में मेरा आबू पर्वत पर चार-पाँच बार जाना हुआ लेकिन विपरीत बातों का इतना गहरा प्रभाव था कि मैंने आबू के मुख्यालय में पाँव भी नहीं रखा।

बाद में मेरी पोस्टिंग दिल्ली में हुई तब भ्राता राजरूप फुलिया जी (आई.ए.एस.) ने हमारे साथ ही प्रशिक्षण लिया। मैं उनके खान-पान, बोल-चाल, रहन-सहन से बहुत प्रभावित हुआ। वडोदरा में भी रेलवे अधिकारी के रूप में हम साथ-साथ रहे। उनसे मुझे बहुत प्रेरणाएँ मिली। जोधपुर की ब्र.कु.रेणु बहन के पिताजी मेरे साथ ही सर्विस में थे, उनके परिवार के साथ भी सेवा के दौरान पारिवारिक रिश्ता बन गया और इस प्रकार रेणु बहन से भी मुझे राजयोग पथ पर चलने के लिए बहुत प्रेरणाएँ मिली। बरेली में जिला कलेक्टर के रूप में तैनाती के दौरान ब्र.कु.कौशली दीदी से भी प्रेरणा मिली।

भ्रान्तियाँ हुई समाप्त

जब कानपुर नगर में सन् 1999 में, कलेक्टर के तौर पर मेरी नियुक्ति हुई तब वहाँ स्वागत बाबा की टोली (प्रसाद) से हुआ। कानपुर ज्वाइन करने जब लखनऊ से चला था तो रास्ते में ही ब्र.कु.विद्या बहन का फोन आया कि भाई साहब, आपका कानपुर में स्वागत है। वे सर्किट हाउस में मेरे पहुँचने से पहले मौजूद थी। उन्होंने टोली खिलाई और दी भी और फिर हर सत्गुरुवार का भोग हमारे पास नियमित रूप से आने लगा। जो भी कुछ सेवाकेन्द्र पर स्पेशल बनता था, वह भी हमारे घर आ जाता था। इस प्रकार, प्रतिदिन थोड़ा-बहुत बाबा के घर का प्रसाद इस शरीर में नियमित रूप से जाने लगा। कानपुर में कार्यक्रमों में तो मैं भाग लेता था परन्तु अभी पक्का निश्चयबुद्धि नहीं बना था। अब ब्रह्माकुमारीज के भाई-बहनें अच्छे लगने लगे थे और मन-बुद्धि में संस्था के प्रति जो भी नकारात्मक भावनाएँ थी वो समाप्त हो गई थी।

ईश्वरीय ज्ञान लगा सरल, स्पष्ट और सटीक

कानपुर के बाद लखनऊ सचिवालय में मेरा तबादला हुआ। कानपुर में दादी गंगे के माध्यम से मैं लखनऊ की निमित्त शिक्षिका ब्र.कु.राधा बहन से परिचित हो चुका था अत: लखनऊ पहुँचते ही सेवाकेन्द्र पर मेरा सात दिन का कोर्स पूरा हो गया। मैंने फिलॉसफी पढ़ रखी थी। कोर्स के पहले दिन ही जब आत्मा का परिचय दिया गया तो मुझे लगा कि यह ज्ञान बहुत सरल, स्पष्ट और सटीक है। दूसरे दिन जब परमात्मा का परिचय दिया गया तो बुद्धि को एकदम अनुभव हुआ कि यदि परमात्मा है तो उसका स्वरूप यही हो सकता है, दूसरा नहीं। परमात्मा के बारे में जितनी भी भ्रान्तियाँ थी, सब समाप्त हो गई।

प्रतिदिन मुरली-क्लास करना शुरू किया

कोर्स पूरा होने के बाद मैंने पूछा, बहन जी, मेडिटेशन तो मुझे समझ में आया नहीं। बहनजी ने कहा, अभी तो आपने वर्णमाला और गिनती सीखी है। यदि पुस्तक पढ़ना, हिसाब करना सीखना है यानि आगे बढ़ना है तो नियमित बाबा की मुरली सुनिए, उसमें प्रश्नों के उत्तर भी मिल जाएँगे, राजयोग करना भी आ जाएगा। यह सुनकर मैंने प्रतिदिन मुरली क्लास करना प्रारम्भ कर दिया। मुरली से मेरे बहुत सारे प्रश्नों के उत्तर मिलने लगे। बाबा की मुरली से व्यक्तिगत, पारिवारिक और प्रशासनिक समस्याओं का समाधान भी होने लगा।

पारिवारिक सम्बन्धों में सुधार

एक दिन मुझे अहसास हुआ कि मेरा व्यक्तित्व दोहरा है। मैं घर में अलग हूँ और बाहर अलग हूँ। जब कार्यालय में या सार्वजनिक स्थानों पर होता हूँ तो शान्त, संतुलित और सम्मानजनक व्यवहार करता हूँ परन्तु जब घर में होता हूँ तो युगल या बच्चों की छोटी-छोटी बातों पर भी मुझे क्रोध आ जाता है या बौखलाहट हो जाती है। पत्रकार यदि ऐसे प्रश्न पूछ लेते हैं जिनसे बौखलाहट हो तो भी संयम रखकर उनके प्रश्नों के उत्तर देता हूँ परन्तु घर में संयम वाली बात न होकर अहंकार की टकराहट होती है। मुरली में बाबा ने कहा है, परिवार के सदस्यों से प्यार से व्यवहार करें, उन पर क्रोध ना करें। बाबा की इस बात से मेरी व्यवहारिक समझ बढ़ी। एक बार मैं योग में बैठा

था, तब चिन्तन चला कि मेरे शुभचिन्तक कौन हैं? बाहर के व्यक्तियों के साथ तो कार्मिक सम्बन्ध हैं। मित्र-रिश्तेदार भी शुभचिन्तक हैं परन्तु सबसे ज्यादा शुभचिन्तक परिवार के सदस्य होते हैं। उनमें भी सबसे अंतरंग (समीप) सम्बन्ध पति-पत्नी के होते हैं। बहुत सारी बातें हम बच्चों से शेयर नहीं कर सकते परन्तु पति-पत्नी आपस में एक-दूसरे को सुनाकर समाधान कर लेते हैं इसलिए सबसे ज्यादा शुभचिन्तक पति-पत्नी को आपस में होना चाहिए। इस चिन्तन के फलस्वरूप मुझे अहसास हुआ कि पत्नी चाहे मेरी आलोचना करे या चुभते शब्दों में बात करे तो भी उसका तात्पर्य मेरे भले के लिए ही होता है। आगे यह चिन्तन चला कि मन्दिर में पूजा सम्पूर्ण शरीर वाले देवी-देवताओं की होती है। पत्नी यदि मेरे किसी व्यवहार में त्रुटि निकालती है तो उनकी आन्तरिक भावना मेरे व्यक्तित्व को सम्पूर्णता प्रदान करने की है। परमात्मा हमें पढ़ाकर देवी-देवता बनाने आए हैं तो मैं अपनी कमियों को दूर करूँगा तभी देवता पद का उम्मीदवार हो सकता हूँ। इससे मेरे व्यवहार में पत्नी के प्रति सम्मान बढ़ा। एक बार मुरली में आया था कि जो आपको प्रतिकूल लगता है उस पर गुस्सा करने के बजाए उस पर फूल चढ़ाने चाहिएँ। इस पर विचार चला कि जो मुझे मेरी कमियाँ दिखाते हैं वे मुझे पूज्य स्वरूप में देखना चाहते हैं इसलिए उनका धन्यवाद करना चाहिए, फूल भले ही ना चढ़ाएँ पर सम्मान जरूर करें। उनके मन में हमारे प्रति ऊँचे भाव हैं, भले ही व्यक्त करने का तरीका हमारी पसन्द का नहीं है। इस प्रकार पारिवारिक सम्बन्धों में काफी सुधार हुआ।

सीखा समय प्रबन्धन

प्रशासनिक क्षेत्र में सबसे पहला बदलाव यह आया कि मैंने समय प्रबन्धन करना सीखा। जब हम प्रशासनिक कार्य में लग जाते हैं तो व्यक्तिगत रुचि के अनुसार समय का उपयोग करने की गुंजाइश नहीं रहती। सार्वजनिक व्यक्ति होने के कारण जनता से सम्बन्धित सेवाओं में पूरा समय लगाना पड़ता है। मीटिंग, जनता से मुलाकात, पत्रकार मुलाकात .....इनमें बहुत सारा समय चला जाता है। मैंने महसूस किया कि सुबह के समय का मैं अपनी रुचि के अनुसार सदुपयोग कर सकता हूँ। अत: मैंने सुबह का समय बचाना प्रारम्भ किया जिसमें व्यायाम, सैर, मेडिटेशन, मुरली क्लास आदि करने लगा। पहले मैं 6 और 7 बजे तक उठता था परन्तु अब प्रात: साढ़े तीन या चार बजे उठना शुरू कर दिया।

निर्णय लेने हुए आसान

प्रशासन में कई बार जटिल समस्याएँ और मुद्दे आ जाते है जिनमे निर्णय लेने के लिए मानसिक द्वन्द्व की स्थिति हो जाती है कि जनता एक बात चाहती है, राजनीतिज्ञ कुछ दूसरा चाहता है, बड़े अधिकारी की अपेक्षा और होती है, कानून कुछ और कहता है, मीडिया का दबाव अलग तरह का होता है। ऐसे में पहली समस्या तो यह होती है कि हम खुद को कैसे सन्तुलित और तनावमुक्त रखें। दूसरी समस्या यह होती है कि हम ऐसा क्या निर्णय लें जिससे सब नहीं तो ज्यादा से ज्यादा लोग सन्तुष्ट हों। ऐसी परिस्थिति में मुझे राजयोग से बहुत मदद मिली। कभी मुरली में इशारा होता कि इस तरह से निर्णय लिया जाए और कभी योग के दौरान सही टचिंग आ जाती और समस्या सुलझ जाती, मैं हल्का हो जाता। कई बार फैसले लोगों की अपेक्षा के विरूद्ध हो जाते थे परन्तु बाद में व्यक्तिगत रूप से वे बताते थे कि आपका फैसला हमारे खिलाफ है परन्तु फिर भी हम सन्तुष्ट हैं क्योंकि हमें लगता है कि आपने निष्पक्ष होकर, कानून सम्मत कार्यवाही की है।

बनी ईमानदार की इमेज

मेरा जन्म बाबा के घर की टोली से हुआ, इस कारण सात्विक खान-पान की धारणा जल्दी हो गई। ज्ञान में आते ही बाजारी खाना बंद कर दिया। ज्ञान में आने से काफी दिन पहले ही चाय, काफी, कोल्ड ड्रिंक पीना बन्द कर दिया था। सार्वजनिक कार्य में मेरी इस धारणा का मुझे बहुत लाभ मिला। मेरे लिए यह बात प्रसिद्ध हो गई कि साहब तो किसी का कुछ भी लेते नहीं हैं और निष्पक्ष रहकर ईमानदारी से काम करते हैं। ईमानदारी वाली इमेज तो पहले भी थी परन्तु ज्ञान में आने पर यह और पक्की हो गई। इससे राजनैतिक और

प्रशासनिक दवाब काफी कम हो गया।

बालक सो मालिक

बाबा की बालक सो मालिक वाली शिक्षा का सार्वजनिक जीवन में मैंने प्रयोग किया। मैं लखनऊ में वित्त विभाग में सचिव था। मुझसे वरिष्ठ प्रमुख सचिव, वित्त के पद पर एक महिला अधिकारी तैनात थी। आमतौर पर वित्त विभाग को अन्य प्रशासनिक विभागों द्वारा अंगड़ेबाज विभाग के रूप में मान लिया जाता है क्योंकि बजट की सीमा तथा कानूनों और नियमों की सीमा में रहकर ही वित्त विभाग काम करता है इसलिए बहुत सारी नई योजनाओं एवं कार्यक्रमों के लिए वित्त उपलब्ध कराना और वित्तिय सहमति देना बहुधा सम्भव नहीं हो पाता है। इससे अन्य विभागीय अधिकारी व राजनीतिज्ञ वित्त विभाग से असन्तुष्ट हो जाते हैं। कभी-कभी वित्त विभाग के परामर्श के विपरीत, उच्च स्तर से निर्णय भी ले लिए जाते हैं जिनका कार्यान्वयन करना बजटीय एवं वित्तिय रूप से बहुत मुश्किल हो जाता है। इन परिस्थितियों में वित्त विभाग के अधिकारी कभी-कभी अपने को असहाय स्थिति में पाते हैं और तनावग्रस्त हो जाते हैं। मैंने एक बार प्रमुख सचिव मैडम से कहा, ये तो चलता ही रहेगा परन्तु हम अपने आपको सन्तुलित रखें तथा तनावग्रस्त ना हो और विवादों से भी बचे रहें, इसका एकमात्र उपाय अध्यात्म में दिखाई पड़ता है। तब परमात्मा द्वारा सिखाई गई बालक सो मालिक और मालिक सो बालक वाली बात मैंने उन्हें बताई। उस समय कई अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे। आध्यात्मिक शिक्षा की इस बात को स्पष्ट करने कि लिए मैंने बताया कि जब हम अपनी वित्तिय राय या टिप्पणी देते हैं तो अधिकारी बनकर दें। इसका तात्पर्य यह है कि हम अपनी टिप्पणी लिखते समय या राय व्यक्त करते समय सारे वित्तिय नियमों, प्रक्रियाओं, बजट की उपलब्धता तथा नगदी के आवागमन (कैशफ्लो) की स्थिति पूर्ण रूप से स्पष्ट कर दें। इसके बाद निर्णय लेने के जो भी सक्षम स्तर हैं, उनके द्वारा निर्णय लिए जाने के बाद हम बालक बन जाएँ और निर्णय को मान लें। यदि निर्णय के कार्यान्वयन में कोई कठिनाई है तो हम अपनी स्थिति को, विकल्प सुझाते हुए, सक्षम स्तर के सामने पुनः स्पष्ट कर दें। मैडम ने कहा, मीना जी, यह बात तो सही है लेकिन फिर भी तनाव कम कैसे हो? तब मैंने बतलाया कि सक्षम स्तर द्वारा यदि हमारे विचारों को ना माना जाए और विपरीत निर्णय लिया जाए तो हम जिम्मेदार नहीं हैं, वे ही जिम्मेदार हैं। इस प्रकार व्यर्थ का बोझ उठाने के बजाए बच्चे बन जाएँ और खुश रहें। ■■■

आओ! होलिका जलाएँ

ब्रह्माकुमारी रश्मि अग्रवाल, सिमडेगा (झारखण्ड)

होली का त्योहार है, संगमयुग की यादगार,
आत्माओं से मिलन मनाता परम-आत्मा निराकार।
होली का आध्यात्मिक रहस्य अब हम जानें,
अवतरित हुए धरा पर भगवान, उन्हें पहचानें।।

प्रभु-प्रेम के रंग में रंग जाता जब तन-मन,
ज्ञान के गुलाल से आत्मा बन जाती पावन।
पवित्रता के श्वेत रंग से जीवन में दिव्यता आती,
आत्मीयता की रोली चेहरे पर मुस्कान सजाती।।

आओ! बीती को बीती करें, जो होली सो होली,
मधुरता का गुण अपनाकर बोलें मीठी बोली।
इस होली पर होली अर्थात् पवित्र बन जाएँ,
पुराने संस्कारों और विकारों की होलिका जलाएँ।।

तब ही आत्मा रूपी प्रह्लाद रह पाएगा सुरक्षित,
अधर्म-अनीति-दंभ रूपी हिरण्यकश्यप वृत्ति से रक्षित।
ज्ञान-गुणों के रंग से मानवता पर लगे जंक मिटाएँ,
आओ! सत्य परमात्मा के संग से जीवन रंगीन बनाएँ।।

ईर्ष्या को कैसे समाप्त करें?

■■■ ब्रह्माकुमार डॉ. अजीत सिंह राणा, रोहतक (हरियाणा)

दूसरे व्यक्ति की प्राप्ति, प्रगति या स्थिति पर मन ही मन होने वाली जलन या डाह को ईर्ष्या कहा जाता है। लौकिक दुनिया की एक कहावत है कि ईर्ष्या, औरत का दूसरा नाम है (Jealousy thy name is woman)। परन्तु, गुण-अवगुण स्त्री या पुरुष के शरीर (जो जड़ है) में नहीं बल्कि मन व आत्मा में बसते हैं इसलिए ईर्ष्या केवल स्त्रियों के बीच नहीं, पुरुषों के बीच भी हो सकती है। ईर्ष्या की गिनती मोटे पांच विकारों में न होने के कारण यह सामान्यत: अदृश्य तथा अस्पष्ट रहती है। वस्तुत: ईर्ष्या छठा बड़ा विकार है। व्यक्ति की आयु बढ़ने पर यह द्वेष, क्रोध, दुश्मनी, कटु प्रतियोगिता आदि के रूप में प्रकट होती है। संस्कारों में बसी ईर्ष्या स्वार्थ आने पर या दूसरों से अपनी तुलना करने पर जागृत हो सकती है। व्यक्ति के विकास पर इसके अनेक दुष्प्रभाव हैं।

कर्म सिद्धांत का उल्लंघन

ईर्ष्यालु व्यक्ति जाने-अनजाने कर्म के नियम (जो जैसा करता है वैसा फल पाता है) की अवहेलना करता है। ईर्ष्यावश वह नहीं चाहता कि अमुक व्यक्ति को उसके श्रेष्ठ कर्म का फल, जिस पर उसका अधिकार है, मिले। इसके लिए वह मनसा या वाचा या कर्मणा के द्वारा इसका विरोध करता है, जो गलत कर्म है। कर्म के नियम के अनुसार इस गलत कर्म की सजा उसको कभी न कभी अवश्य मिलेगी। अत: कर्म के नियम को जानने, मानने व उस पर चलने वाला व्यक्ति कभी ईर्ष्या नहीं करेगा।

ईर्ष्या चाट जाती है प्रेम को

ईर्ष्या प्रेम जैसे अनमोल सद्‌गुण को चुटकियों में चाट जाती है। ईर्ष्यालु व्यक्ति अच्छे से अच्छे मित्र तथा सम्बन्धों की घनिष्ठता को खो बैठता है। ईर्ष्या; नफरत, द्वेष, क्रोध, दुश्मनी आदि को जन्म देती है। इससे नकारात्मक संस्कारों की टक्कर शुरू हो जाती है। ईर्ष्यालु व्यक्ति का प्रगति का पथ अवरुद्ध हो जाता है। उसके जीवन की खुशियाँ छिन जाती हैं, जीवन निरस हो जाता है।

मूर्खता

ईर्ष्यालु व्यक्ति ईर्ष्या करके अपनी मूर्खता का ही प्रमाण दे रहा होता है। जिस व्यक्ति से उसकी प्राप्ति पर ईर्ष्या की जाती है वह प्राप्ति तो उसे हो चुकी होती है। अब ईर्ष्या करने से क्या प्रयोजन? अत: कोई मूर्ख व्यक्ति ही ईर्ष्या करेगा। जैसे प्रेम, प्रेम को बढ़ाता है ठीक इसी प्रकार ईर्ष्या, ईर्ष्या को बढ़ाती है। इससे समाज की ऊर्जा, समय, संकल्प आदि नकारात्मक कार्यों में खर्च होते हैं, समाज का आर्थिक स्तर भी गिर सकता है।

ईर्ष्या से बचने के उपाय

ईर्ष्या करने की बजाय सम्बन्धित व्यक्ति को उसकी प्राप्ति पर तुरन्त बधाई दें। दूसरों के सामने उसकी दिल से महिमा करें। इससे ईर्ष्या तुरंत समाप्त हो जाएगी।

ईर्ष्या करने की बजाय प्राप्ति स्वरूप व्यक्ति से प्रेरणा लेकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ें। स्वयं आगे बढ़ने पर, मन ही मन उस व्यक्ति का धन्यवाद भी करें।

अन्य पांच विकारों की तरह ईर्ष्या विकार भी मन में पैदा होता है इसलिए दिन में 20-21 बार एकांत में बैठ कर यह दोहरायें कि मुझे ईर्ष्या नहीं, महिमा करनी है। मात्र 2-3 महीने के सतत अभ्यास से ईर्ष्या का संस्कार आत्मा से निकल सकता है क्योंकि जैसा हम अपने बारे में बार-बार सोचते हैं, वैसा बन जाते हैं।

राजयोग मेडिटेशन आत्मा को न केवल ईर्ष्या बल्कि हर विकार से मुक्त कर सकता है। इसके लिए 8-10 मिनट सुबह-शाम, दिल से आत्मा में टिक कर, शिव परमात्मा की याद में, बार-बार पवित्रता के संकल्पों को दोहरायें। संकल्प चलायें कि हम सब परमात्मा की सन्तान हैं इसलिए मैं आत्मा किसी से भी ईर्ष्या नहीं करती बल्कि महिमा करती हूँ। फिर व्यवहार में भी ऐसा ही करें। ऐसा करने से पुण्य भी जमा होगा। यह ईर्ष्या विकार को नष्ट करने का अचूक मन्त्र है। ■■■

जो व्यक्ति दूसरों की भलाई चाहता है, वह अपनी भलाई सुनिश्चित कर चुका होता है

शान्तिवन- इंडियाज मोस्ट स्पार्कलिंग स्टार अवार्ड 2020 पुणे में प्राप्त करने के बाद ब्र.कु.देवान भाई, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी को अवार्ड समर्पित करते हुए।

शहेरा- जीवन परिवर्तन रथ अभियान कार्यक्रम का हरी झण्डी दिखाकर शुभारम्भ करते हुए विधायक जेठाभाई भरवाड, जिला महामंत्री भाजपा जिग्नेश भाई पाठक, नगर सेवासदन प्रमुख स्नेहलता बहन, ब्र.कु.रतन बहन तथा अन्य।

वडोदरा (अटलादरा)- किसान सशक्तिकरण कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.राजू भाई, विधायक शैलेष भाई महेता, जिला खेती-वाडी अधीक्षक भ्राता एन.एन.-वसावा, किसान समाज महामंत्री भ्राता विपिनचन्द्र पटेल, ब्र.कु.अरुणा बहन तथा अन्य।

वडोदरा (अलकापुरी)- इंडियन एक्टिव जर्नलिस्ट यूनियन तथा ब्रह्माकुमारीज के सहयोग से आयोजित मीडिया सेमिनार का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.शान्तनु भाई, पत्रकार हेमराज भाई पाडलिया, ब्र.कु.मीना बहन तथा अन्य पत्रकारगण।

गांधीनगर (सेक्टर-3)- वरिष्ठ नागरिकों के लिए आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.सुनीता बहन। मंचासीन हैं पार्षद राकेश भाई, पार्षद जयराज सिंह वाघेला, साई बाबा मन्दिर ट्रस्टी नरेन्द्र भाई शाह तथा अन्य।

मालिया-हाटिना- हेल्थ सेमीनार का उद्घाटन करते हुए योगाचार्य दुष्यंत भाई मोदी, सामाजिक कार्यकर्ता महेन्द्र भाई गांधी, ब्र.कु.मीता बहन तथा अन्य।

होडल- ए.सी.टी.एस.में विभागाध्यक्ष भ्राता धर्मेन्द्र शर्मा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.उषा बहन। साथ में ब्र.कु.संदीप भाई।

दाहोद- व्होरा समाज के स्नेह मिलन कार्यक्रम में ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र.कु.कपिला बहन।

दत्तात्रेय के 24 गुरु

■■■ ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

'शिव-दाता' अपने स्थापना, विनाश व पालना के कर्त्तव्यों को ब्रह्मा, शंकर व विष्णु, इन त्रिदेवों के माध्यम से पूरा कराते हैं। तो दाता व त्रिदेव, ये मनुष्य सृष्टि के शाश्वत स्वरूप को कायम रखने के आधार हैं। ईश्वर के लिए भक्ति में कह दिया जाता है कि वह 'अत्र, तत्र, सर्वत्र' है अर्थात् सर्वव्यापी है परन्तु वह सर्वत्र नहीं। हाँ, वह तत्र (वहाँ परमधाम में) और वर्तमान समय 'अत्र' (यहाँ भारतभूमि में) है। यदि वह सर्वव्यापी होता तो इन त्रिदेवों की आवश्कता ही न होती। अनुसूईया व ऋषि अत्री की सन्तान दत्तात्रेय (दाता+त्रिदेव) को ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर का अवतार माना जाता है। दत्तात्रेय के वास्तव में तीन मुख नहीं थे। भक्ति-भावनावश उनके चित्रों में ब्रह्मा, विष्णु व शंकर के प्रतीकात्मक मुख बनाए जाते हैं और छः हाथों में धारित अलंकार – माला+कमण्डल, चक्र+शंख व त्रिशूल+डमरू क्रमशः इन त्रिदेवों के दो-दो अलंकारों को दर्शाते हैं।

दत्तात्रेय के साथ चार कुत्ते व एक गाय दिखाई जाती है। कुत्ते चार वेदों के व गाय धरती माता की प्रतीक बताई जाती है। यह चार वेदों की बात नहीं बल्कि राजयोग के चार विषय – ज्ञान, योग, धारणा व सेवा की बात है, जो कल्प के अन्त में उसी प्रकार आत्मा का साथ निभाते हैं, जिस प्रकार अन्तिम समय में धर्मराज युद्धिष्ठिर का साथ धर्म रूपी कुत्ते ने निभाया था। 'धर्मराज' अर्थात् जो सद्गुणों को धारण करके इन्द्रियों पर राज करे। ये हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि तो दैहिक धर्म हैं जो यह बतलाते हैं कि देह की पैदाइश किस धर्मानुयायी परिवार में हुई है। फिर उसी धर्म की मान्यताएँ व रीति-रिवाज आत्मा पर 'राज' करते हैं। गौमाता का दूध हो या धरती माता प्रदत्त भोजन हो, ये देह को पोषित करते हैं जबकि ब्रह्मामुख से उच्चारित ईश्वरीय ज्ञान-मुरली आत्मा को पोषित करती है। त्रिमूर्ति, त्रिलोक, त्रिगुण, त्रिकाल आदि के ज्ञान के दाता शिव हैं। परन्तु 'दत्तात्रेय' ने अपने जीवन में आए 24 प्रकार के प्रतिकात्मक गुरुओं के माध्यम से भी ज्ञान उठाया था। राजयोग के ज्ञान की पृष्ठभूमि में इन गुरुओं से निम्न बातें भी समझ में आती हैं –

1. पृथ्वी – सहनशीलता, दुख में भी स्थिर रहना, अपकारी पर भी उपकार करना :- जो कुछ भी स्थूल व जड़ है, सब पृथ्वी से निकला है और पृथ्वी में ही समा जाता है। इसीलिए इसे 'धरती-माता' अर्थात् धारण करने वाली माता भी कहा जाता है। माता ही प्रथम गुरु व प्रथम पूजनीय है। माता ही सहनशीलता की मूर्त होती है। आप इस माता के वक्ष में खुदाई करें, वह आपको जल, पेट्रोल, हीरे, स्वर्ण व बहुमूल्य धातुएं आदि देती है। वक्ष के ऊपर वृक्ष भी मनुष्यों को आक्सीजन, फल व काष्ठ-सम्पदा प्रदान करते रहते हैं। आप इस माता को कचरे, गंदगी, विषैले रसायनों से दूषित करें, यह सबको समा कर उनका विषाक्त स्वरूप बदल लेती है। आप इसके वन, उपवन को नष्ट करते जाएँ, वह मूक-दर्शक होकर सब सह लेती है और महाविनाश के बाद खुद ही अपनी

आदि अवस्था को पुन: प्राप्त कर लेती है। माता के सात रूपों का गायन है - धरती (पृथ्वी)-माता, गंगा-माता, गीता-माता, गौ-माता, भारत-माता, ब्रह्मा-माता और सबकी अपनी-अपनी लौकिक माता। पूरे ब्रह्माण्ड में अरबों-खरबों ग्रह-नक्षत्रों के मध्य यह पृथ्वी सबसे न्यारी व चमत्कारिक खूबियों से भरी माता है क्योंकि इस पर विभिन्न जीवन पलते हैं। प्रति वर्ष 22 अप्रैल को पृथ्वी-दिवस (Earth Day) मनाया जाता है। यदि सूर्य को शिव के और चन्द्रमा को ब्रह्मा के सापेक्ष रखा जाए, तो धरती-माता की गोद में पलते ऐसे ज्ञान-सितारे भी हैं जो सूर्य व चन्द्रमा की पालना पाकर ब्रह्माकुमार-कुमारियों के रूप में प्रत्यक्ष हुए हैं।

2. जल – पारदर्शिता, बिना पक्षपात के सभी के काम आना:- कहावत है 'जल बिना जीवन नहीं', जो कि 'गुरु बिना गति नहीं' से समानता रखता है क्योंकि गुरु ही जीवन को गति व दिशा देता है। 'ज्ञानगंगा', 'ज्ञानजल' आदि स्वच्छता व सत्यता के द्योतक हैं और यदि यह स्वच्छता व सत्यता आत्मा में आए, तो ऐसा जल सद्गुरु के समान है। चाहे धोबीघाट हो या प्रतिमाओं के जलविसर्जन का स्थल, जलगुरु सबकुछ अपने में समेट कर उन्हें धरती माँ के हवाले कर देता है और खुद स्वच्छ हो जाता है। 'जल' पीने से शरीर शीतल होता है और ज्ञानजल पीने से आत्मा शीतल होती है। पृथ्वी के कुल जल का मात्र 3 प्रतिशत ही पीने योग्य है बाकी समुद्र का खारा जल है। इस 3 प्रतिशत का मात्र 1 प्रतिशत उपलब्ध है बाकी जल ग्लेशियर व बर्फिले प्रदशों में कैद है। शहद, दूध, फल-सब्जियाँ आदि खाद्य पदार्थों में जल की प्रचुरता होती है। शरीर हो या पृथ्वी, उनका 70 प्रतिशत भाग जल होता है। जल की महिमा अपार है, जल के बिना सबकुछ असार है। जल की हर बूंद का सम्मान करें, चाहे वह आसमान से टपके या किसी की आँखों से टपके। जल दरिया में हो या नयनों में, गहराई व राज दोनों में होते हैं।

3. वायु – निर्बन्धन, लगावमुक्त, समानता, सर्व का कल्याण करना:- वायु है आयु प्रदान करने वाली। गुरु से 'आयुष्मान भव:' का आशीर्वाद मिले तो यह फलता है। 'प्राणवायु' से ही जीवन है और जीवन 'वायुपुत्र' हनुमान के जैसा होना चाहिए जिसके लिए 'राम' (शिव) ही बाप, शिक्षक, सद्गुरु आदि सबकुछ थे। शिव के महावाक्य भी वायु के बिना कानों तक पहुँच नहीं सकते। ज्ञान के शब्दों को वायु ही कानों में उडेलती है। वायु में 78% नाइट्रोजन, 21% ऑक्सीजन, 0.90% ऑरगन और 0.04% कार्बन-मोनोक्साइड व अन्य सूक्ष्म गैस हैं। यह 21% ऑक्सीजन, 79% अन्य गैसों के बीच रहते हुए भी मानव को प्राणवान रखती है अत: गुरु सदृश्य है। आज 'वायु-प्रदूषण' एक गंभीर खतरा बन गया है। 'वायु' कभी अपने 'प्रदूषण' के लिए 'पर-दोषण' नहीं करती और जो प्रदूषण के दोषी हैं, वायु उनकी भी गुरु माफिक पालना करती रहती है।

4. अग्नि – परिवर्तन-शक्ति, योग अग्नि से संस्कार परिवर्तन:- आत्मा है सूक्ष्मातिसूक्ष्म ज्योति (अग्नि) बिन्दु और सूर्य है वृहतातिवृहत् अग्निकुण्ड। दोनों ही अविनाशी हैं। आत्मा का शरीर रूपी चोला सूर्याग्नि से जरूरत की ऊर्जा जीवन भर लेता रहता है। शरीर अन्दर से आत्म-अग्नि और बाहर सूर्याग्नि से प्राप्त ऊर्जा का उपयोग करता है। गुरु का अर्थ है – 'गु' अर्थात् अन्धकार से 'रु' अर्थात् प्रकाश की ओर ले जाना। यह प्रकाश चाहे ज्ञान का हो, चाहे उष्मा या अग्नि का हो, इसके बिना अस्तित्व नहीं। हम कहते हैं, मुर्दा जल गया अर्थात् मुर्दे का जल भाप बन गया और राख बच गई। इसी प्रकार, ज्ञान व योगाग्नि से यदि पतित आत्मा के विकार जल गए तो आत्मा में सतोप्रधानता बचती है।

5. आकाश – विशालता, बेहद की वृत्ति व दृष्टि:- आकाश अर्थात् जिसकी कोई सीमा न हो, जिसका कोई अन्त न हो। आकाश जितना ही विशाल है, उतना ही खामोश भी। कुछ दिन खामोशी में रहने पर फिजूल के लोगों से किनारा हो जाता है। 'विशाल-हृदय' को 'आकाश-हृदय' भी कहा जा सकता है। सर्व आत्माओं के प्रति ईश्वर की भांति कल्याणकारी वृत्ति व

दृष्टि रखना आकाश-हृदय होने जैसा है। शिव का ज्ञान आकाश की तरह बेहद व बेअन्त है।

6. सूर्य – कर्तव्यपरायणता, नि:स्वार्थता, परोपकार, नियमितता:- पूरे ब्रह्माण्ड में करोड़ों सूर्य हैं परन्तु अपने सौरमण्डल का सूर्य सबसे न्यारा है। ज्ञानसूर्य शिव ब्रह्मातन में उदय होकर पुरुषोत्तम संगमयुग लाते हैं और आत्माओं को सम्पन्न बना कर 4900 साल के लिए अस्त हो जाते हैं अर्थात् वापस ब्रह्मलोक में चले जाते हैं। ज्ञान-सूर्य शिव परमसद्गुरु हैं, उसी प्रकार, ऊर्जा-पुँज सूर्य भी सद्गुरु की तरह कर्तव्यपरायण, परोपकारी व सेकेण्ड-बाई-सेकेण्ड नियमित होकर अनादि काल से उदय व अस्त हो रहा है। अत: भक्ति में सूर्य की भी ईश्वर की तरह पूजा की जाती है। जल के तीन रूप – ठोस, तरल व वाष्प सूर्य की तपन पर निर्भर करते हैं। उसी प्रकार मनुष्यात्माओं के तीन रूप – सतो, रजो व तमो भी पतितपावन शिव से योग-वियोग पर निर्भर करते हैं। शिव 5000 साल में एक बार आते हैं जबकि सूर्य 5000 साल में प्रतिदिन आता है। शिव चले जाते हैं तो दिन (सतयुग) होता है और सूर्य चला जाता है तो रात होती है। शिव अज्ञान व विकारों को मिटाते हैं, तो सूर्य अन्धकार, बीमारियों व जीवाणुओं को मिटाता है।

7. चन्द्रमा – शीतलता:- गुरु का सानिध्य, उसका ज्ञानप्रकाश संतप्त मन को शीतलता, विक्षिप्त बुद्धि को दिव्यता और तामसिक संस्कारों को श्रेष्ठता प्रदान करता है। चन्द्रमा का आकाश में टंगे रहकर रात्रि में सी.एफ.एल. बल्ब की तरह शीतल प्रकाश बिखेरना रचनाकार परमात्मा की गुह्य योजना का हिस्सा है। गुरु जीवन को प्रकाशित करता है, तो 'चन्द्रगुरु' भी रात्रि को प्रकाशित करता है। ज्ञानसूर्य शिव परमसद्गुरु हैं तो ज्ञानचन्द्रमा ब्रह्मा को भी परोक्ष रूप में गुरु इसलिए कहा जा सकता है क्योंकि ब्रह्मा के द्वारा कहे गये वाक्यों की भी जिम्मेवारी परमपिता शिव अपने ऊपर लेते हैं। ब्रह्मा वाली आत्मा की कलाएं सतयुग से घटती जाती हैं और फिर संगमयुग में बढ़ती जाती हैं। उसी प्रकार चन्द्रमा की कलाएं भी आधा समय घटती जाती हैं और फिर आधा समय बढ़ती जाती हैं। ब्रह्मा हो या चन्द्रमा, दोनों में 'मा' (माता) शब्द समाया हुआ है।

8. समुद्र – गंभीरता, समाने की शक्ति:- 'समुद्र' अर्थात् 'सम-मुद्रा' या 'समान-मुद्रा'। समुद्र की सतह पर लहरें चढ़ती व गिरती रहती हैं परन्तु अन्दर की विशाल गतिविधियों को वह जाहिर नहीं करता। अत: हमें भी समुद्र की तरह जीवन के उतार-चढ़ाव में अन्दर से अचल-अडोल रहना चाहिए। नदियों के द्वारा लाए गए कचरे को तो समुद्र समा लेता है परन्तु जल को वाष्पिकृत करके बादल बनाता है। ये बादल फिर पहाड़ों व भूमि पर बरस कर मीठे जल की नदियाँ बनाते हैं। गुरु का काम ही है खारे को 'खरा' या मीठा बनाना। समुद्र का जल खारा (Acidic) इसलिए भी होता है ताकि डाले जा रहे कचड़ों को विखण्डित करके मूल तत्वों में परिवर्तित कर सके। अनादि काल से यदि यह शाश्वत गुह्य कार्य न चल रहा होता तो समुद्र कचरे से पट गया होता। गुरु परम्परा भी यदि कल्प-कल्प द्वापर व कलियुग में न चले तो समाज आसुरी मनुष्यों से पट जाए और यह समाज, समाज न रह कर रौरव नर्क बन जाए।

9. अजगर (आलसी, उद्यमहीन) – यथा प्राप्ति संतुष्टता:- 'अज' अर्थात् जिसका जन्म न हो अर्थात् ईश्वर। 'गर' अर्थात् बनाने वाला (जादूगर, बाजीगर, कलईगर इत्यादि)। अज-गर अर्थात् वह ईश्वर जो कौड़ी से हीरेतुल्य, असुर से देवता बनाए। ऐसा अद्भुत परिवर्तन लाने वाला एक परमसद्गुरु शिव ही हो सकता है। अजगर एक ऐसा स्थूलकाय सर्प जैसा प्राणी भी होता है जो अपने शिकार को निगल लेता है और फिर कई दिनों तक कहीं आलस में पड़ा रह कर उसे पचाता है। महाविनाश रूपी अजगर सबकुछ निगलता व तहस-नहस करता है और यह वसुन्धरा 2500 साल तक शान्त रहती है। इस प्रकार अजगर शान्ति की सृष्टि ही रचता है अत: गुरु के समान है।

क्रमश:

सरकाघाट- हिमाचल प्रदेश के सिंचाई व जन-स्वास्थ्य मंत्री भ्राता महेन्द्र सिंह ठाकुर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. निर्मला बहन।

चरखी दादरी- गणतन्त्र दिवस पर ब्र.कु. प्रेम बहन को प्रशस्ति-पत्र प्रदान करते हुए युवा तथा खेल मंत्री सरदार संदीप सिंह। साथ में जिलाधीश भ्राता धर्मवीर सिंह तथा विधायक भ्राता सोमवीर सांगवान।

सांपला- गणतन्त्र दिवस पर ब्र.कु. ललित भाई को सम्मानित करते हुए पूर्व आई.जी. भ्राता सुरेश शर्मा, डॉ. सुरेश राठी तथा अन्य।

जलन्धर (ग्रीन पार्क)- सिविल हॉस्पिटल टीम के इन्चार्ज डॉ. गगनदीप को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. रेखा बहन, डॉ. एस बाथ तथा डॉ. जसवन्त सिंह बाथ।

सिरसा (सद्भावना भवन)- श्री विश्वकर्मा आध्यात्मिक स्नेह-मिलन का शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. करण भाई, अखिल भारतीय स्वर्णकार चैरिटेबल ट्रस्ट के भ्राता मोहन लाल वर्मा, कार्यकारिणी इंजीनियर भ्राता सतीश, ब्र.कु. सुभाष भाई, ब्र.कु. कीर्ति भाई, ब्र.कु. प्रीति बहन तथा अन्य।

लुधियाना- युवाओं के लिए आयोजित 'कम्युनिकेटिंग विद माईसेल्फ' विषयक कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए दर्शन ग्रुप ऑफ कम्पनी के अध्यक्ष भ्राता गुरमीत सिंह कुलार, एस.पी. भ्राता संदीप शर्मा, डिप्टी कमान्डेंट भ्राता नरेश कुमार, फैशन डिज़ाइनर बहन भावदीप कौर, ब्र.कु. सरस्वती बहन तथा ब्र.कु. सीमा बहन।

नरवाना- शाश्वत यौगिक खेती प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन करते हुए पंजाब नेशनल बैंक फार्मर ट्रेनिंग सेंटर की निदेशक बहन किरण कुमारी, पूर्व विस्तार शिक्षा निदेशक भ्राता राजेन्द्र रंगोकन्द, कृषि अधिकारी भ्राता कुलदीप शर्मा, ब्र.कु. विजय भाई तथा ब्र.कु. सीमा बहन।

कादमा (तिवाला)- रक्तदान शिविर का शुभारम्भ करते हुए नाबार्ड के जिला महाप्रबन्धक भ्राता सोहनलाल, ब्र.कु. वसुधा बहन तथा अन्य।

मंडावर- व्यसनमुक्ति जागृति कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए राजस्थान के चिकित्सा तथा स्वास्थ्य राज्यमंत्री डॉ.सुभाष गर्ग, ब्र.कु.सुषमा बहन तथा अन्य।

आसींद (भीलवाड़)- स्मृति दिवस कार्यक्रम में पुष्पांजली अर्पित करने के बाद ईश्वरीय स्मृति में हैं विधायक भ्राता जब्बर सिंह शाखला, ब्र.कु.जमुना बहन तथा अन्य गणमान्यजन।

शान्तिवन (आबू रोड)- रोटरी डफ स्कूल, मुम्बई के प्रतिभागीगण, ब्र.कु.सूर्यमणि भाई, ब्र.कु.डॉ.सविता बहन, ब्र.कु.भरत भाई तथा अन्य, इशारों की भाषा में राजयोग शिविर के बाद ईश्वरीय स्मृति में।

भादरा- ब्र.कु.भगवती बहन को सम्मानित करते हुए सी.आई.एम.भ्राता पुष्पेन्द्र झाझरिया, उपखण्ड अधिकारी भ्राता जीतू मीना तथा तहसीलदार भ्राता मुकेश जी।

चौमहला- सेवाकेन्द्र भवन के लिए भूमि शुद्धिकरण कार्यक्रम में उपस्थित है ब्र.कु.हेमलता बहन, ब्र.कु.मीना बहन, ब्र.कु.गीता बहन, थाना प्रभारी भ्राता कल्याण सिंह, तहसीलदार भ्राता बालचन्द्र मीणा तथा अन्य गणमान्य जन।

भीलवाड़ा (पथिकनगर)- 'डिजाइन योर डेस्टिनी' कार्यशाला का शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु.तरुणा बहन, प्राचार्या डॉ.मीनू बहन, ब्र.कु.इन्द्रा बहन, ब्र.कु.तारा बहन, डॉ.अशोक भाई तथा ब्र.कु.अमोलक भाई।

जयपुर (सांगानेर)- प्राचार्या बहन अनुपमा माहेश्वरी, ब्र.कु.पूजा बहन को सम्मानित करते हुए।

मोहाली- स्टार पब्लिक स्कूल में ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु.भगवान भाई स्टाफ के सदस्यों के साथ समूह चित्र में।

भक्ति का फल भगवान मिला

■■■ ब्रह्माकुमारी मनिषा, वडोदरा (डेरी सेन्टर), गुजरात

चार साल की आयु में जन्मदायिनी माँ से और 12 साल की आयु में पिता से मेरा बिछोह हो गया। इसी आयु में मुझ में भक्ति का बीजारोपण भी हो गया। भक्ति से मुझे शक्ति बहुत मिली और अपने इष्ट का साक्षात्कार भी कई बार किया। इष्ट के साथ मेरा दिल का रिश्ता था। रामदेव पीर मेरे इष्ट थे। मैं उन्हें परिवार का एक सदस्य समझती थी। बाद में श्रीकृष्ण और शंकर जी की भक्ति भी करने लगी। मन्दिर जाते भक्ति को ही साथ ले जाती थी अर्थात् रास्ते भर पाठ किया करती थी। इष्ट ने मेरी कदम-कदम पर मदद की। संसार से दुखी थी पर इष्ट के संग में बहुत खुश रहती थी।

श्रीकृष्ण को भाई, रामदेव पीर को पिता और शंकर जी को दादा मानती थी। भाई से अपार स्नेह, बाप से अपार प्यार और दादा से दुलार मिलता था। भक्ति में इतना सब मिलता था, ज्ञान-मार्ग में आने से तो और भी अधिक मिल रहा है, जो अवर्णनीय है।

दो नावों पर सवार

एक बार मुझे महसूस हुआ कि मैं दो नावों पर सवार हूँ, यह ठीक नहीं है। दोनों में से किसी एक पर सवार होना चाहिए पर किस पर होऊँ? कौन-सी नाव मंजिल पर पहुँचाएगी, यह समझ में नहीं आ रहा था। दो नाव अर्थात् रामदेव पीर और श्रीकृष्ण। रामदेव पीर की भक्ति छूटती नहीं थी और श्रीकृष्ण का आकर्षण अति में था। तब मैंने भगवान से मदद माँगी। सुबह आँखें खुलते ही, मंदिर में भगवान के सामने बैठ प्रार्थना करती थी कि मुझे सही दिशा दिखाओ।

भगवान ने सुनी प्रार्थना

प्रतिदिन सुबह भगवान के सामने मेरी यही रटन चलती रही और भगवान ने मेरी सुन ली। मेरी लौकिक बहन पिछले आठ मास से ईश्वरीय ज्ञान में चलने लगी थी। उसे ईश्वरीय ज्ञान बहुत अच्छा लगा और उसने मुझे बताया। वह घंटों फोन पर समझाती थी परन्तु मेरे मन पर कोई असर नहीं होता था। एक दिन मैं शंकर जी के मंदिर में गई, वहाँ मुझे एक पर्चा मिला जिस पर लिखा था, 'शिव सन्देश'। श्रावण मास चल रहा था। पर्चा था ब्रह्माकुमारीज की ओर से। पर्चा पढ़ते ही मन में ठान लिया कि अब तो जाना ही है। वडोदरा के अनेक ब्रह्माकुमारी सेन्टरों के पते पर्चे पर लिखे थे। नजदीकी पते पर मैं पहुँच गई और सात दिन का कोर्स कर नियमित मुरली सुनने लगी। मेरे युगल भी मेरे साथ प्रतिदिन सेवाकेन्द्र पर जाते हैं।

अब ज्ञान में चलकर, सही रास्ता पाकर लगता है कि मेरे जैसा भाग्यवान और कोई नहीं। स्वयं भगवान ने मुझे चुना है। कभी सोचा भी नहीं था कि भगवान मिल जायेंगे, हम उनके इतने समीप आ जाएँगे, वे अपनी गोदी में बिठाकर हमारी पालना करेंगे। भक्ति का फल कितना सुंदर मिला! धन्यवाद बाबा हजारों बार! ■■■

सदस्यता शुल्क:

(भारत) वार्षिक: 100/- आजीवन: 2,000/-
(विदेश) वार्षिक - 1,000/- आजीवन - 10,000/-

शुल्क ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता:

'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510
(आबू रोड) राजस्थान, भारत।

For Online Subscription: **Bank**: State Bank of India, **A/c Holder Name**: Gyanamrit, **A/c No**: 30297656367
Branch Name: PBKIVV, Shantivan, IFSC Code: SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र:

Mobile: 09414006904, 09414423949, **Email:** hindigyanamrit@gmail.com, omshantipress@bkivv.org

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, मुख्य सम्पादक एवं प्रकाशक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबूरोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन- 307510, आबूरोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया।
मुख्य सम्पादक - ब्र.कु. आत्मप्रकाश, **सम्पादक** - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन, **सह-सम्पादक** - ब्र.कु. सन्तोष, शान्तिवन

फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये:

E-mail: gyanamritpatrika@bkivv.org, omshantiprintingpress@gmail.com, Website: gyanamrit.bkinfo.in

छापरा- बिहार के राज्यपाल महामहिम भ्राता फागू चौहान को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.अनामिका बहन। साथ में ब्र.कु.शंकर भाई तथा अन्य।

फरीदाबाद (सेक्टर-21 डी)- हरियाणा के मुख्यमंत्री भ्राता मनोहरलाल खट्टर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.प्रीति बहन।

मधेपुरा- बिहार के मुख्यमंत्री भ्राता नितिश कुमार को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रन्जु बहन। साथ में हैं पूर्व प्रमुख विनय वर्धन, डॉ.सचिदानन्द चौधरी तथा अन्य।

फिनलैंड (हेलसिन्की)- भारत की राजदूत बहन वाणी राव को ईश्वरीय साहित्य देते हुए ब्र.कु.भारतभूषण भाई। साथ में हैं ब्र.कु.गीता बहन तथा ब्र.कु.इला बहन।

सखडा (नेपाल)- मुख्यमंत्री स्वच्छ अभियान कार्यक्रम में समूह चित्र में हैं मुख्यमंत्री भ्राता एम.एल.बहादुर राउत, पूर्व उप-प्रधानमन्त्री भ्राता उपेन्द्र यादव, कृषि मन्त्री भ्राता शैलेन्द्र साह, सांसद बहन रेणु यादव, विधायक भ्राता अभिशेख यादव तथा ब्र.कु.भगवती बहन।

विजयवाड़ा- 'सेलेब्रेट अवरी मोमेन्ट' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए होटल प्रबन्ध निदेशक भ्राता एम.मुरली कृष्ण, पूर्व न्यायाधीश भ्राता ईश्वरैय्या, ब्र.कु.सविता बहन, ब्र.कु.शिवानी बहन, ब्र.कु.शान्ता बहन, व्यवसायी भ्राता दिलीप जैन तथा उद्योगपति भ्राता के.राव।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2018-2020 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road) Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2018-2020. Published on 20th of each Month & Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : March, 2020.

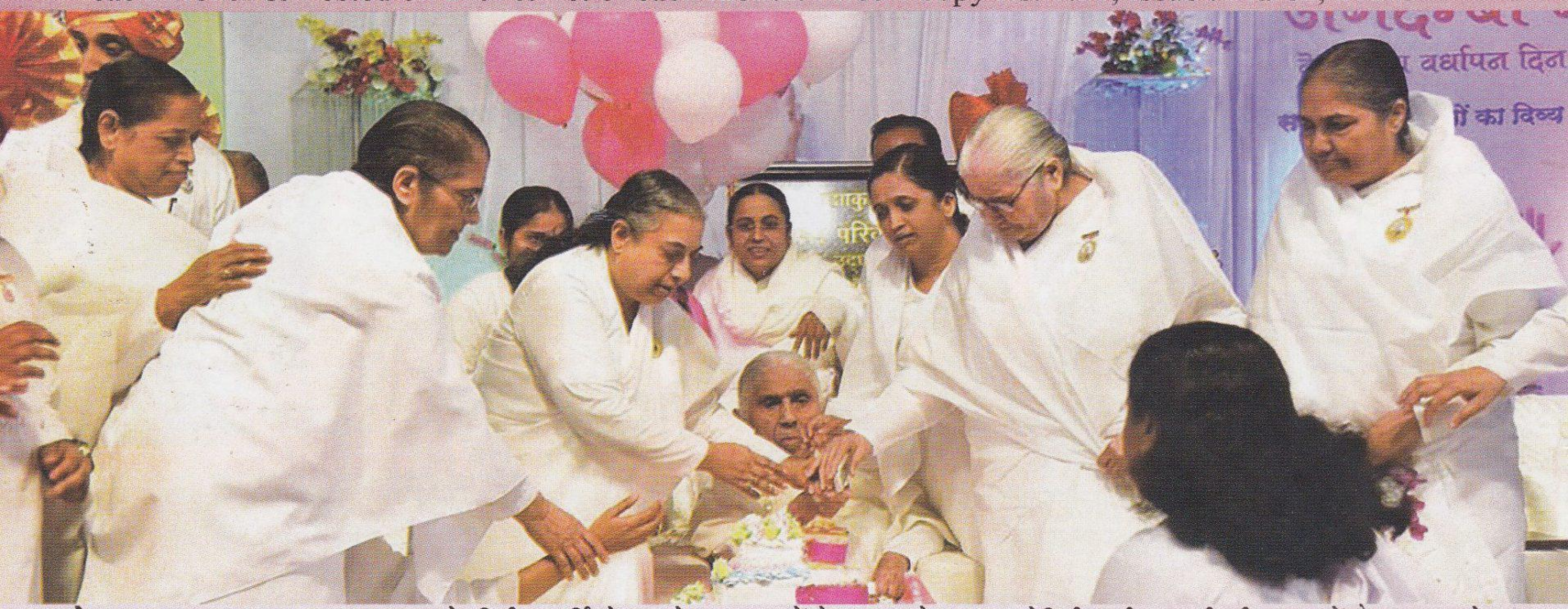

पुणे (जगदम्बा भवन)- जगदम्बा भवन के द्वितीय वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में केक काटते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी। साथ में हैं ब्र.कु.सन्तोष बहन, ब्र.कु.सुनन्दा बहन, ब्र.कु.उर्मिला बहन, ब्र.कु.हंसा बहन, ब्र.कु.शोभा बहन तथा अन्य।

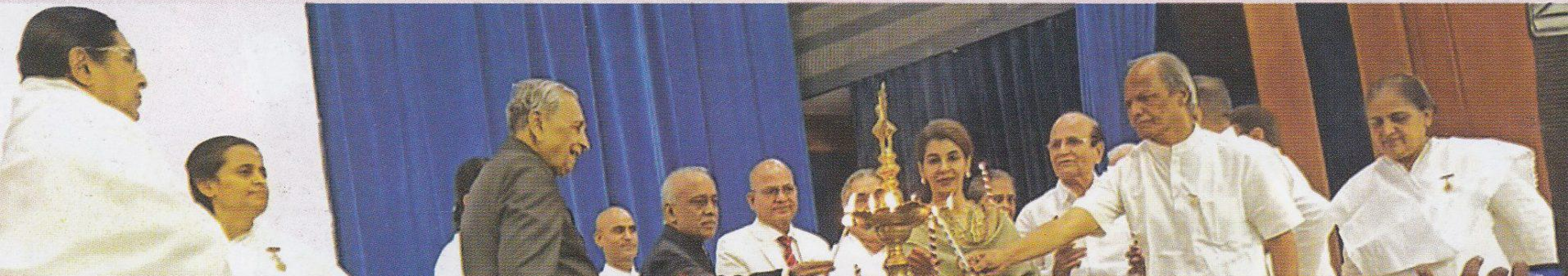

मुम्बई (गामदेवी)- ब्र.कु.रमेश भाई जी की तीसरी पुण्यतिथि पर आयोजित मेमोरियल लेक्चर कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता वी.रामसुब्रह्मण्यम, ब्र.कु.दिव्या बहन, ब्र.कु.निहा बहन, अभिनेत्री बहन अनिता राज, जस्टिस भ्राता वी.ईश्वरैय्या, ब्र.कु.भ्राता बी.एल.माहेश्वरी तथा अन्य।

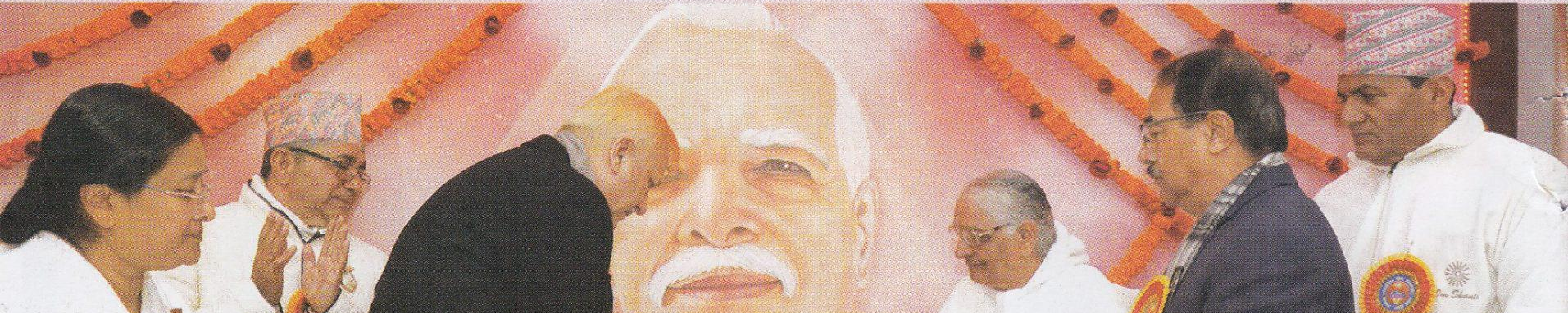

काठमाण्डू (नेपाल)- विश्व शान्ति दिवस कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए नेपाल के उद्योग, वाणिज्य तथा आपूर्ति मन्त्री भ्राता लेखराज भट्ट, ब्र.कु.राज बहन, सांसद भ्राता भीमसेन दास प्रधान तथा अन्य।

If undelivered, please return to Gyanamrit Bhawan, Shantivan, Abu Road, Sirohi-307510